सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

दिसम्बर, 2017 वर्ष 16 अंक 10

नबी का पैरो रब का पैरो

रब का इल्म नबी से पाया, इल्म नबी का रब से पाया
नबी से हमने कुर्आं पाया, कुर्आं में ज़िक्र नबी का पाया
शुक्र खुदा का करते हैं हम, नअ़त् नबी की पढ़ते हैं हम
रब है खालिक़ राज़िक़ अपना, पाक नबी है हादी अपना
नबी हमारे हादिये आज़म, सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
हुब्बुल्लाह ईमान है अपना, हुब्बे नबी ईमान है अपना
दुआ हैं करते रब से दिल से, शिर्को बिदअ़त पास न फटके
करें इबादत रब की दिल से, यक्सू हो कर मुख़लिस दिल से
नबी से करते हम हैं महब्बत, नबी की करते हम हैं ताअ़त
नबी का पैरो रब का पैरो, कुर्आं में है आया पढ़ लो
नबी हमारे रहमते आलम, सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
अल्लाह के महबूब और आखिरी	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	09
वह बिल यकीं नबी हैं (पद्य)	मौलाना सै0 मुहम्मद सानी हसनी रह0	15
मीडिया का दो रूखा पन	मौ0 डॉक्टर सईदुर्रहमान आजमी नदवी	16
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	20
शासक तथा शासित	मौलाना अ़ब्दुस्सलाम किदवाई नदवी	23
जी0एस0टी0 (पद्य)	अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी	24
दीन पे अपने रहेंगे हम (पद्य)	इदारा	25
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	26
नमाज़ की हक़ीक़त व अहम्मीयत	मौलाना मंजूर नोमानी रह0	29
भविष्य मुसलमानों का है	मौ0 सै0 मु0 वाजेह रशीद हसनी नदवी	33
आला तालीम के साथ–साथ	राशिदा नूरी	38
अमरूद, सेब और नाशपाती	उबैदुल्लाह सिद्दीक़ी	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुअर्नि की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-निसा:

अनुवाद-

और मुसलमान का काम नहीं कि वह मुसलमान को मार डाले सिवाय इसके कि गलती से ऐसा हो जाये और जिसने मुसलमान को गलती से मार दिया तो एक मुसलमान गुलाम को आज़ाद करना (उस पर अनिवार्य है) और खूँ–बाहा (अर्थ–दण्ड) है जो उसके घर वालों के हवाले किया जाएगा सिवाय इसके कि वे माफ़ कर दें और अगर वह (मारा हआ व्यक्ति) तुम्हारी दुश्मन क़ौम से था और वह खुद मुसलमान था तो केवल एक मुसलमान गुलाम आज़ाद करना (अनिवार्य है) और अगर (मारा गया व्यक्ति) उस क़ौम से था जिसका तुम से समझौता है तो खूँ–बहा है जो उस (मारे गए व्यक्ति) के सम्बन्धियो के हवाले किया जाए और एक मुसलमान गुलाम को आज़ाद करना भी अनिवार्य है फिर जिस को यह उपलब्ध न .हो तो लगातार दो महीने के रोज़े हैं अल्लाह से माफ कराने के लिए, और अल्लाह खूब जानता है बड़ी हिकमत वाला है[1](92) और जिसने जान बूझ कर किसी मुसलमान को मार डाला तो उसका बदला दोज़ख है वह उसी में पड़ा रहेगा और उस पर अल्लाह का ग़ज़ब (प्रकोप) हुआ और उसकी फटकार हुई और उसके लिए उस अल्लाह ने बड़ा अज़ाब तैयार कर रखा है[2](93) ऐ ईमान वालो! जब अल्लाह के रास्ते में यात्रा करो तो अच्छी तरह देख भाल लो और जो तुम्हें सलाम करे दुन्या के साधन की चाहत में यह मत कह दो कि तुम मुसलमान नहीं, अल्लाह के पास बहुत माल–ए–ग़नीमत है, तुम भी पहले उसी तरह थे तो अल्लाह ने तुम पर एहसान किया तो (खूब) जांच कर लो, बेशक तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसकी पूरी खबर रखता है[3](94) मुसलमानों में अकारण बैठे रहने वाले और अपने मालों और अपनी जानों से अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले बराबर नहीं हो सकते, अपने मालों और अपनी जानों से जेहाद करने वालों का अल्लाह ने दर्जा बढ़ा रखा है और भलाई का वादा अल्लाह ने सबसे किया है और अल्लाह ने बैठे रहने वालों के मुक़ाबले जिहाद करने वालो को बड़े बदले से सम्मानित किया है[4](95) (यानी) अपने पास से (बुलंद) दर्जों और मगफ़िरत व रहमत से, और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है(96) बेशक फ़रिश्ते जिन लोगों की रूह (आत्मा) इस हाल में निकालते हैं कि वे अपने साथ बुरा कर

रहे थे (उन से) पूछते हैं कि तुम कहां पड़े हुए थे वे कहते हैं कि हम ज़मीन में बेबस थे (फ़रिश्ते) कहते है कि क्या अल्लाह की ज़मीन चौड़ी न थी कि तुम उसमें हिजरत कर जाते बस ऐसे लोगों का ठिकाना दोज़ख है और पहुंचने की बुरी जगह है[5](97) सिवाय उनके जो मर्दों, औरतों और बच्चों में बेबस हैं न वे कोई उपाय कर सकते हैं और न ही उनको रास्ता मिल रहा है[6](98) ऐसे लोगों के बारे में आशा है कि अल्लाह उनको मॉफ़ कर देगा और अल्लाह बहुत मॉफ़ करने वाला बड़ा दयावान है(99) और जो अल्लाह के रास्ते में हिजरत करेगा वह ज़मीन में बहुत जगह और गुंजाइश पाएगा और जो अपने घर से अल्लाह और उसके पैग़म्बर की ओर हिजरत के लिए निकला फिर उसको मौत आ गई तो उसका बदला अल्लाह के ज़िम्मे होगा और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है[7](100) और जब तुम ज़मीन में यात्रा करो तो तुम्हारे लिए कोई हर्ज नहीं की तुम नमाज़ में क़स्र कर लिया करो अगर तुम्हें डर हो कि काफ़िर तुम्हें परेशान करेंगे, बेशक काफ़िर तुम्हारे खुले दुश्मन ही रहे हैं[8](101)

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. यह क़त्ल-ए-ख़ता (धोखे से क़त्ल) के आदेश हैं घटना कुछ इस तरह घटी है कि कुछ मुसलमानों ने मुसलमानों को हरबी (जिन से यद्ध जारी हो) समझ कर क़त्ल कर दिया, बाद में चेते तो यह आदेश आया, क़त्ल-ए-ख़ता के और भी रूप हैं शिकार समझ कर मारा वह इंसान निकला या ग़लती से गोली चल गई और किसी को लग गई, इस प्रकार जो भी क़त्ल होगा उसमें यही आदेश है, अब जिसको मारा गया वह काफ़िर से समझौता किये हुए है तो भी यही आदेश है और अगर समझौता नहीं है तो केवल गुलाम आज़ाद करना है खूँ-बहा (अर्थ दण्ड) नहीं देना है और जो गुलाम आज़ाद नहीं कर सकता वह दो महीने के लगातार रोज़े रखे।

2. महा पापी इतनी लंबी अवधि तक दोज़ख में रहेगा कि मानो हमेशा वहीं रहा।

3. एक युद्ध में काफ़िरों में एक मुसलमान था वह सब माल ले कर अलग हो गया और उसने सलाम किया मुसलमानों ने समझा कि जान बचाने के लिए सलाम करता है इसलिए उसको मार डाला और उसका सब सामान ले लिया, उस पर चेताया गया और जांच लेने का आदेश दिया गया।

4. हो सकता है कि दिमाग़ में आता कि जिहाद में भूल चूक से हो सकता है कोई नाहक मारा जाये इससे बेहतर बैठे रहना है तो कहा गया कि जिहाद बड़े अज्र व सवाब (बदले) की चीज़ है और जिहाद से बैठे रहना भी अकारण उसी समय जायज़ है जब जिहाद हर व्यक्ति के ज़िम्मे फ़र्ज-ए-ऐन न हो।

5. अपनी जान पर जुल्म करना कुर्आन का एक परिभाषिक शब्द है जिसका मतलब होता है कोई बड़ा पाप करना क्योंकि पाप करके इंसान अपनी जान ही को नुक़सान पहुंचाता है, इस

शेष पृष्ठ....22 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

दोरूखी बात मुनाफक़त है:-

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि कुछ लोगों ने उनसे कहा कि हम बादशाहों के सामने कुछ कहते हैं और उनकी ग़ीबत में दूसरे ढ़ंग की बात करते हैं, हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के काल में हम इसको निफाक समझते थे। (बुखारी)

रिया (दिखावा) व प्रसिद्धि चाहने का अंजाम:-

हज़रत जुंदुब बिन अब्दुल्लाह बिन सुफयान रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने कोई नेकी इस गरज से की कि लोग सुनें और उसकी शुहरत हो तो अल्लाह तआ़ला कियामत में उसको मशहूर करेगा और उसको रुसवा करेगा और जो अल्लाह के लिए अमल करेगा तो अल्लाह तआला उसका बदला देगा। (बुखारी—मुस्लिम)

इल्मे दीन दुन्या के लिए हासिल करना:-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया वह इल्म जो अल्लाह की खुशनूदी के लिए सीखा जाता है, अगर उसको किसी शख़्स ने दुन्या के किसी मकसद के लिए सीखा तो कियामत में उसको जन्नत की खुशबू तक न पहुंचेगी। (अबू दाऊद)

दिखावा जो वास्तव में दिखावा नहीं:-

हज़रत अबू जर्र रज़ि0 से रिवायत है कि लोगों ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कोई भलाई का कार्य करे और लोग उस की जम कर प्रशंसा करें, इसके बारे में आप क्या इरशाद फरमाते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया यह मोमिन के लिए अग्रिम खुशखबरी है। (यानी उसके नेक कार्यों का बदला है।

(मुस्लिम)

ग़ैर महरम (अपरिचित औरत) की ओर बिना दीनी ज़रूरत के देखने की हुरमत (निषेद्वता):-

आयतों का अनुवाद:—

मुसलमान मर्दों से कह दो कि अपनी निगाहें नीची रखा करें। (सू—रए—नूर: 4)

बेशक कान और आँख और दिल सब ही से पूछ होगी।

(सू—रए—बनी इस्राईल: 4)

अल्लाह जानता है आँखों की चोरी को और उस ख्याल को भी जो छुपाये रखते हैं।

(सू—रए—मोमिन :1)

बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता घात में है।

(सू—रए—फज्र)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल0 ने फरमाया आदमी के लिए ज़िना (व्यभिचार) का

जो भाग मुकद्दर हो चुका है उसको वह पा लेने वाला है। आँखों का ज़िना बद निगाही है, कानों का ज़िना हराम आवाज का सुनना है, ज़बान का ज़िना हराम बात चीत है, हाथ का ज़िना नाजायज प्रयोग है, पैरों का ज़िना हराम चीज की ओर कदम उठाना है, दिल इच्छा और तमन्ना करता है और इन्सान की शर्मगाह (गुप्तांग) उसकी पुष्टि करती है अथवा झुठलाती है अर्थात अगर अमल कर लिया तो उस ख्याल की पुष्टि हो गयी वरना नहीं।

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम रास्ते में न बैठा करो, उन्होंने अर्ज किया हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यही हमारी बैठक है और यह हमारे लिए अति आवश्यक है, यहाँ बैठ कर हम आपस में बातें करते हैं, आपने फरमाया अगर तुम्हारे लिए यह मजलिसें ज़रूरी हैं तो फिर रास्ते का हक़ दो, उन्होंने अर्ज़ किया रास्ते का हक क्या है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया निगाह नीची रखना, तकलीफ पहुंचाने वाली वस्तु का रास्ते से हटा देना, सलाम का जवाब देना, और नेकी की ओर बुलाना, बुराई से रोकना, यह रास्ते का हक है।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू तलहा जैद बिन सहल रज़ि0 से रिवायत है कि हम सिहन में बैठे बातें कर रहे थे इतने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाये और हमारे सामने खड़े हो कर फरमाया तुम रास्तों ही में मज्लिस कायम करते हो, रास्तों की मजलिसों से परहेज करो, उन्होंने अर्ज किया हम किसी को नुकसान पहुंचाने की गरज से नहीं बैठे, हम सिर्फ आपस में बातें करने की गरज से बैठे है, आपने फरमाया तुम्हारे लिए उतना ही ज़रूरी है कि फिर उसका हक दो और उसका हक यह है कि निगाह नीची रखो, सलाम का जवाब दो और अच्छी बात कहो।

(मुस्लिम)

हज़रत जरीर रज़ि0 से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज किया अगर अचानक निगाह किसी अपरिचित औरत पर उठ जाये तो क्या करूं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुरंत निगाह फेर लो! (मुस्लिम)

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 से रिवायत है कि हम और मैमूना रज़ि0 रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे, इतने में अब्दुल्लाह इब्ने मकतूम रज़ि0 जो अंधे (सहाबी) थे आप के पास आये आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया इनसे पर्दा कर लो हम ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह तो नाबीना हैं न यह हम को देख सकेगें न पहचानेंगे, आपने फरमाया कि क्या तुम दोनों भी नाबीना हो, क्या तुम उनको न देखोगी।

(अबू दाऊद–तिर्मिजी)

शेष पृष्ठ....22 पर

अल्लाह के महबूब और आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0

अल्लाह के प्रिय तथा अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

सारी तारीफें सिर्फ अल्लाह के लिए हैं, जो सारे जहानों का रब है, रहमान है, रहीम है, रोज़े जज़ा का मालिक है, ऐ अल्लाह हम सब सिर्फ तेरी इबादत करते हैं और सिर्फ तुझ ही से मदद तलब करते हैं , हम को सीधा रास्ता दिखा दे और उस पर चला दे वह रास्ता जिस पर लोग चले तो तूने उनको तरह तरह के इनआमात दिये, उन बुरे लोगों का रास्ता नहीं कि उस पर लोग चले तो उन पर तेरा प्रकोप हुआ, न ऐसों का रास्ता जो भटक गये, आमीन या रब्बल आलमीन।

अल्लाह ने ऐसी अच्छी और कारआमद ज़मीन बनाई जिस पर हम रहते बसते हैं, और हमारे ऊपर नीले आसमान का सायबान तान दिया, उसके अन्दर सूरज, चांद, तारे रोशन कर दिये, दिन काम करने को और रोज़ी कमाने को बनाया और रात आराम करने को बनाया, अपनी मख़लूक़ (सृष्टि) में इन्सान को सब से अफ़्ज़ल (सर्वश्रेष्ठ) बनाया और इन्सानों में अपने प्यारे और इन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़ैरुल बशर (सब से भला इन्सान) बनाया, उन पर लाखों दुरूद हों और उन पर लाखों सलाम हों।

अल्लाह तआला ने अपनी मखलूक़ को सीधा रास्ता बताने और उस पर चालाने के लिए बहुत से नबियों और रसूलों को भेजा, हजरत नूह, हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्माईल, हज़रत मूसा आदि, (उन सब पर अल्लाह का सलाम हो) और न जाने कितने पैगम्बर भेजे, जिन की गिन्ती अल्लाह ही को मालूम है, हज़रत ईसा अलै0 आए तो यहूदियों ने उन को झुठलाया और उन की बड़ी मुखालफ़त की, यहां तक कि उन को सलीब पर चढ़ा देने का फ़ैसला कर लिया, ऐसे मौक़े पर अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को जिन्दा आसमान पर उठा लिया, और एक दूसरे शख्स को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की शक्ल का कर दिया, जिस को यहूदियों ने सलीब पर चढ़वा दिया।

उसके बाद दुन्या में बड़ा फसाद फैला इन्सानियत तिलमिला उठी, जुआ, शराब खोरी, क़त्ल, ज़िना सारे पाप खुल्लम खुल्ला होने लगे, बच्चियां जिन्दा ही गाड़ी जाने लगीं, तो अल्लाह तआला की रहमत जोश में आई और अल्लाह तआला ने अपने महबूब और आखिरी नबी को दुन्या में भेजा, अल्लाह तआला आप पर लाखों रहमतें नाजिल फरमाए और आप पर लाखों सलाम हों।

हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वालिदा का नाम आमिना था और वालिद साहिब का नाम अब्दुल्लाह था, अल्लाह की मरज़ी, आप अभी पैदा भी

नहीं हुए थे, माँ के पेट में थे कि वालिद साहिब अब्दुल्लाह का इन्तिकाल हो गया, जवान बेटे के इन्तिकाल से आप के दादा अब्दुल मुत्तलिब को बड़ा दुख हुआ, लेकन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाईश से दादा अब्दुल मुत्तलिब को बड़ी खुशी हुई।

बीवी आमिना कितनी खुशकिसमत थीं कि अल्लाह के आखिरी और महबूब नबी की माँ होने का शरफ उनको हासिल हुआ, जब हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपके बतने मुबारक में थे तो हज़रत आमिना ने ऐसे अनवार व बरकात देखे कि उनको वह सोच भी न सकती थीं, न कोई तक्लीफ़, न कोई गरानी, अच्छे अच्छे ख्वाब दिखाई देते, ख्वाब में फ़िरिश्ते आ कर आपको खुश खबरी देते, जिससे वह समझती कि उनके पेट में जो बच्चा पल रहा है वह कोई गैर मामूली बच्चा है आप की पैदाइश मशहूर क़ौल के मुताबिक़ वा– किए–फील के पचास रोज़ बाद 12 रबीउल अव्वल पीर के रोज़ सुब्हे सादिक़ के वक्त हुई।

मक्के में यह दसतूर था कि कुरैश खान्दान में जो बच्चा पैदा होता, आस पास के गाँव से दूध पिलाने वाली औरतें आतीं और बच्चे को ले जा कर अपना दूध पिलातीं, और जब बच्चे का दूध छूटता तो उनको वापस कर जातीं, कभी दूध छूटने के बाद भी अपने पास रखतीं यहां तक कि बच्चा अपनी ज़रूरियात पूरी करने लगता तो वालिदैन के पास पहुंचा कर इनआ़म व इकराम लेतीं, इसी रिवाज के मुताबिक़ हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दूध पिलाने के लिए दाई हलीमा ले गईं और आपकी बरकात देख कर हैरान रह गईं, दूध छोड़ने के बाद भी आप दाई हलीमा के पास रहे, फिर अपनी माँ के पास आ गये, 6 साल की उम्र में मुहतरम माँ का भी इन्तिकाल हो गया, दादा अब्दुल मुत्तलिब ने अपने पास रखा, दस साल के हुए तो दादा जान भी इस दुन्या में न रहे, चचा अबू तालिब के साथ रहने लगे, आप की सिहत बहुत अच्छी थी, खूबसूरती में यक्ता थे 25 साल के हुए तो बीवी खदीजा जो एक रईस औरत थीं वह भी सूरत व सीरत में यक्ता थीं उम्र चालीस साल थी, वह बेवा थीं, उन्होंने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ईमानदारी और शराफत से मुतअस्सिर हो कर आप को खुद शादी का पैग़ाम दिया, आप ने क़बूल कर लिया और निकाह हो गया।

हलाल रोज़ी के लिए शुरुअ़ में आप ने उजरत पर बकरियां चराईं फिर तिजारत करते रहे।

अल्लाह के इल्म में तो हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अज़ल ही से खातिमुल अंबिया थे लेकन जब आपको अल्लाह ने दुन्या में पैदा फरमाया और चालीस साल के हो गये तो आप को नुबूवत अता फ़रमाई गई, फिर जब आप ने कुरैश को बुला कर बताया कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, इस बात का इकरार कर लो तो कामियाब हो जाओगे, और बताया कि मैं अल्लाह का

रसूल हूं, यह एलान सुन कर नेक रूहों वाले तो ईमान लाते गये और मुसलमान होते गये, लेकिन बदबख़्त लोगों ने आप की मुखालफ़त शुरुअ़ कर दी, यहां तक कि आपके हक़ीक़ी चचा अबू लहब भी आपके दुशमन हो गये, अबू जहल भी आप का दुशमन हो गया, लेकिन साथ ही बहुत अच्छे अच्छे लोग इस्लाम में दाखिल होने लगे, सबसे पहले तो हम सब की माँ, आप की ज़िन्दगी की साथी बीवी खदीजा ईमान लाई आपके दोस्त हज़रत अबू बक्र और चचा जाद भाई हज़रत अली जो अभी दस साल ही के थे ईमान ले आए, हज़रत जैद ईमान ले आए, और ईमान लाने वालों का एक सिलसिला चल पड़ा, शैतान की कोशिशों से मुखालफ़त भी बढ़ने लगी यहां तक कि अल्लाह की पनाह हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल के मंसूबे बनाए गये, तब अल्लाह के हुक्म से आप एक रात हज़रत अबू बक्र को साथ ले कर मदीने को हिजरत के लिए रवाना हो गये, और खैर व आफ़ियत से मदीना पहुंच गये अब मदीने से इस्लाम फैलने लगा यहां तक कि एक रोज़ यह भी आया जब आप बड़ी शान व शौक़त के साथ हज़ारों सहाबा के साथ मक्का मुकर्रमा में फ़तिहाना दाखिल हुए और काबे को बुतों से पाक करके अल्लाह के हुक्म से मुसलमानों का क़िब्ला बना दिया।

बेशक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम सब के आक़ा हैं, मौला हैं, सरदार हैं, आपको अल्लाह तआला ने अपनी मख़लूक़ में ऐसा ऊँचा अख़लाक़ दिया कि अल्लाह तआला ने खुद ही फरमाया कि आप खुल्के अज़ीम पर हैं, जिस का कोई सहारा न था अल्लाह के फ़ज़्ल से उसके सहारा आप बनें, अल्लाह की मसलहत से आपने लिखना पढ़ना नहीं सीखा, आप का उस्ताद सिर्फ़ अल्लाह हुआ और अल्लाह के हुक्म से आपने सारे आलम को अल्लाह की रज़ा हासिल करने का सबक़ पढ़ाया अल्लाह तआला ने आपको सारे आलमों के लिए रहमत बना कर भेजा, अल्लाह तआला की इजाज़त से आप अपनी गुनहगार उम्मत की शफ़ाअ़त फरमाएंगे यानी अल्लाह तआला से सिफ़ारिश कर के उनके गुनाहों की मुआफी दिलाएंगे, आप खातिमुल अंबिया और खातिमुर्रुसुल हैं, आपके बाद न कोई नबी आएगा न रसूल हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जो आसमान से उतारे जाएंगे वह तो पहले से नबी हैं फिर भी वह दुन्या में आ कर आखिरी नबी ही की शरीअ़त पर चलेंगे, आप तमाम अंबिया और रसूलों के सरदार हैं और अल्लाह तआला के महबूब हैं, हम दुआ करें कि ऐ अल्लाह हमारे रसूल पर सलामती नाज़िल फ़रमाऐ, अल्लाह अपने महबूब रसूल पर रहमतें नाज़िल फरमा, ऐ अल्लाह आपकी औलाद आपके अस्हाब और आप की अज़वाज़ पर भी सलामती और रहमतें नाज़िल फ़रमा।

हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुअ़जिजात बेशुमार हैं उनमें से कुछ का

ज़िक्र किया जाता है, एक रात आपके पास हजरत जिब्रील अलै0 तशरीफ़ लाए और बुराक़ सवारी पर सवार करके काबे से बैतुल मक़दिस ले गये। वहां आपने नमाज़ पढ़ाई अंबिया अलै0 ने आपके पीछे नमाज़ अदा की फिर वहीं से हज़रत जिब्रील के साथ बुराक़ पर सवार हो कर आप सातों आसमानों के ऊपर गये, अल्लाह तआला से राज व नियाज़ की बातें कीं, अल्लाह की जानिब से आप को और आप की उम्मत को पंज वक़्ता नमाज़ का तोहफ़ा मिला, मक्के से बैतुल मक़दिस और बैतुल मक़दिस से असमानों के ऊपर जाना हर हर आसमान पर किसी नबी से गुफतगू करना, सिदरतुल मुन्तहा से ऊपर जाना, जन्नत व दोज़ख का मंज़र देखना, फिर अल्लाह तआला से राज़ व नियाज़ की बातें करना, पचास वक्त नमाज़ को हज़रत मूसा अलै0 के मशवरे पर बार बार दरबारे इलाही में जाना और नमाज़ का कम करवाना यहां तक की पांच वक्त की नमाज़ रह गई, यह सारा काम बस रात भर में हो जाना बल्कि रात में किसी वक्त रवानगी हुई थी और फ़ज्र से क़ब्ल वापसी हो गई, यह एक अज़ीम मुअजिज़ा था जिस को मेअ़राज का मोअ़जिज़ा कहा जाता है।

हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुअ़जिज़ात बे हिसाब हैं, आप की तो हर बात मुअ़जिज़ा थी, आप खजूर के एक तने को खुत्बे का मिम्बर बनाए हुए थे जब आप के लिए नया मिंबर तैयार किया गया और उस पर आप जल्वा अफ़रोज़ हुए तो खजूर वाला मिंबर जो पास ही था जुदाई के गम में ज़ोर ज़ोर से रोने लगा, सब ने उस के रोने की आवाज़ सुनी, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिंबर से उतर कर उसके पास गये और उस पर अपना मुबारक हाथ रखा तो वह सिसकियां लेता हुआ चुप हो गया, लकड़ी से इन्सानों की तरह रोने की आवाज़ आना यह आप का मुअ़जिज़ा था। इस मुअ़जिज़े को "उस्तूने हन्नाना" कहते हैं।

आप ने एक बार कंकरियों को इशारा किया तो वह कलिमा पढ़ने लगीं, एक बार आपने चाँद को उंगली से इशारा किया तो उसके दो टुकड़े अलग अलग हो गये, जिसे वक्त के मौजूद सब लोगों ने देखा, फिर दोनों टुकड़े आपस में मिल गये, कभी पत्थर से आवाज़ आई "अस्सलामु अ़लैक या रसूलल्लाह" कभी दरख़त से आवाज़ आई "अस्सलामु अलैक या रसूलल्लाह" यह सब हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुअ़जिज़ात थे जिन को देख कर ईमान वालों में मज़बूती व ताज़गी आई नेक रूहें ईमान लाईं लेकिन बद रूहें कुफ़्र ही में मुब्तला रहीं।

एक बार लगभग पन्द्रह या चौदह सौ सहाबा के साथ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उम्रे की नियत से निकले हुदैबिया के मैदान में पहुंचे थे, कि कुरैशे मक्का ने जो अभी ईमान न लाए थे रुकावट डाली हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन से गुफ़्तगू की और सुलह

फरमाई। तै पाया कि इस साल लौट जाएं और आइन्दा आ कर उम्रा करें खुदा की मसलहत पानी खत्म हो गया। चौदह पन्द्रह सौ सहाबा प्यासे भी थे और उनको वुजू भी करना था हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लोटे में थोड़ा पानी था, आप को इत्तिला की गई कि पानी नहीं है और पानी की सख़्त ज़रूरत है, आपके लोटे में जो पानी है बस उतना ही पानी है आपने लोटे में हाथ डाला, आप की उंगलियों से चशमे उबल पड़े और लोग पानी लेने लगे यहां तक कि चौदह पन्द्रह सौ लोगों ने पिया भी और वुजू भी किया, यह भी हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुअ़जिज़ा था जिसे सहाबा ने अपनी आंखों से देखा, अल्लाह की रहमत व सलामती हो आप पर।

एक बार जब मालूम हुआ कि मक्के वाले बड़ी तादाद के साथ मदीने पर हमला करने वाले हैं तो यहां जंगी मसलहत से तै पाया कि मदीने के एक जानिब खन्दक़ खोद दी जाए, ताकि दुशमन आसानी से मदीने में दाखिल न हो सकें, खन्दक़ की खुदाई चल रही थी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी खुदाई में शरीक थे लोग भूखे थे, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी भूखे थे, हज़रत जाबिर रज़ि0 के घर में एक साअ़ यानी तकरीबन साढ़े तीन किलो आटा था, उन्होंने सालन के लिए एक बकरी का बच्चा ज़ब्ह कर दिया और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दावत दी, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आ़म एलान कर दिया कि सब लोगों की जाबिर के घर दावत है, हज़रत जाबिर घबरा गये बीवी को मालूम हुआ तो उन्होंने ढारस बंधाई कि जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दावत का एलान किया तो हम लोगों को क्या फिक्र है, हुजूर ने हज़रत जाबिर के घर जा कर सालन और आटे में अपना लुआबे दहन मिलाया और दुआ की जिस से इतनी बरकत हुई कि हज़ार से ज़ियादा सहाबा ने पेट भर कर खाना खाया और खाना उसी तरह मौजूद था यह हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुअ़जिज़ा था।

एक मुअ़जिज़ा और पढ़ें, एक बार अस्हाबे सुफ्फ़ा भूखे थे, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी भूखे थे, हजरत अबू हुरैरा हाज़िर हुए वह भी भूखे थे, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मालूम किया कि घर में कुछ खाने को है? एक प्याला दूध पेश किया गया, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबु हुरैरा रज़ि0 को हुक्म दिया कि अस्हाबे सुफ्फा को बुला लाओ वह सब आ गये हुक्म हुआ कि बारी बारी से इस प्याले से पेट भर भर कर दूध पियो, सब ने बारी–बारी से पिया और सब के पेट भर गये, लेकिन प्याला दूध से भरा रहा हुक्म हुआ हुरैरा अब तुम पियो, उन्होंने पिया, फरमाया और पियो उन्होंने और पिया, हुक्म हुआ और

पियो, अबू हुरैरा ने अ़र्ज़ किया हुजूर! पेट भर चुका है, बाक़ी दूध हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद पिया, हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह भी एक अजीबो गरीब़ मुअ़जिज़ा है। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बेशुमार मुअ़जिज़ात हैं उनमें से बहुत से हदीस की किताबों में महफ़ूज़ हैं वहीं से यह चन्द मुअ़जिज़े नमूने के तौर पर पेश किये गये हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला ने जो पैगाम दिया था वह उम्मत को पूरी तरह पहुंचा दिया। हिज्जतुल वदाअ़ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा से पूछा कि क्या हमने तुम को अल्लाह तआला का पैगाम पहुंचा दिया? सब ने यकज़बान हो कर कहा, हाँ बेशक पहुंचा दिया, हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम को बताया कि इबादत के लाइक़ सिर्फ अल्लाह है, कोई उसका साझी नहीं और बताया कि मैं अल्लाह का रसूल हूं, आप ने सहा–बए–किराम को यह तालीम इस तरह दी और उनके दिलोंमें इस तरह बिठा दिया कि अगर उनके सामने दुन्या की दौलत रख दी जाती और उनसे कहा जाता कि तौहीद के अ़क़ीदे से बाज़ आओ तो यह दौलत तुम्हारी है, सहाबा उस दौलत को लात मार देते मगर तौहीद का अ़क़ीदा न छोड़ते इसी तरह न वह तलवार के डर से तौहीद का अकीदा छोड़ते न आग में जलाये जाने के ख़ौफ से तौहीद का अ़क़ीदा छोड़ते, अल्लाह तआला हम सब को उसी तरह का ईमान नसीब फरमाए, आमीन।

आपसे पूछा गया कि इस्लाम क्या है? आपने फरमाया इस्लाम यह है कि तुम गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, और गवाही दो कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ क़ायम करो, ज़कात अदा करो, रमज़ान के रोज़े रखो, इस्तिताअ़त हो तो ज़िन्दगी में एक बार हज्ज करो। हम मुसलमानों को चाहिए कि इन पाँचों बातों को पूरी तरह अपनाएं। आप से पूछा गया कि ईमान क्या है? आप ने फरमाया ईमान लाओ अल्लाह पर, उसके फिरिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, क़ियामत के दिन पर और तक़दीर पर अच्छी हो या बुरी सब अल्लाह ही की तरफ से है। हम ईमान वालों को चाहिए कि इन 6 बातों को दिल में बिठा लें और मज़बूती से इन पर क़ायम रहें।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हम पर इतने एहसानात हैं कि हम उनको गिन भी नहीं सकते हम पर फर्ज़ है कि हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअ़त करें आप से खूब महब्बत रखें और आप पर खूब खूब दुरूद व सलाम पढ़ा करें।

सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व अ़ला आलिही व अस्हाबिही व अज़वाजिही व ज़ुर्रियातिही व बारक व सल्लम।

❖❖❖

वह बिल यकीं नबी हैं ता रोज़े हश्र सब के

—मौलाना सय्यिद मुहम्मद सानी हसनी रह0

जिस ज़ात का मुहम्मद है पाक नामे नामी
बख्शी हमें खुदा ने उस ज़ात की गुलामी
अपने पराए सब के वह गमगुसार व हमदम
वह बेकसों के वाली वह बे बसों के हामी
आक़ा हैं वह हमारे हम हैं गुलाम उन के
उनके ही पाक दीं के हम दाई व पयामी
हर एक की ज़बां पर है पाक नाम उन का
राज़ी हों या ग़ज़ाली, कुदसी हों या कि जामी
अल्लाह के पयम्बर सरताज अंबिया के
अदना गुलाम उन के हैं नामियो गिरामी
वह शफक़ते मुजस्सम वह रहमते दो आलम
क्या उन की महरबानी क्या उनकी खुश कलामी
वह बिल यकीं नबी हैं ता रोज़े हश्र सब के
है आम जो नुबूवत तो फैज़ है दवामी
लाखों दुरूद उन पर लाखों सलाम उन पर
दिल से यह पढ़ रहा है उन का गुलाम सानी

मीडिया का दोरुखा पन

—मौलाना डॉक्टर सईदुर्रहमान आजमी नदवी—
हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

मानवीय इतिहास ने हर दौर में मीडिया के लाभ की प्रशन्सा की और उसे स्वीकारा है, उस का लाभ हर काल में स्वीकार किया गया है। अल्बत्ता आधुनिक काल में मानव समाज में मीडिया ऐसी आवश्यक हो गई है कि उसको समाज से अलग नहीं किया जा सकता यह मीडिया कभी मानव जाति के निर्माण, विकास तथा सफलता की ओर ले जाने और कभी मानव समाज के भवन को ढा देने तो कभी कौम के साहस को गिरा देने और कभी मानव जाति की नैतिकता को उज्जवल करने में एक प्रभावकारी रोल अदा करता है। अपितु यह कहना अधिक शुद्ध होगा कि यह दोधारी तलवार की भांति है, जहां वह मानव जाति में साहस तथा उत्साह उत्पन्न करता है वहीं उस का गलत प्रयोग मानवीय जीवन के लिए घातक विष बन जाता है।

आधुनिक काल में मीडिया के महत्व का अनुमान इस तौर पर लगाया जा सकता है कि यह मानवीय जीवन के समस्त विभागों पर छाया हुआ है। उसके प्रभाव और उसकी पहुंच का हाल यह है कि शहर तो शहर देहात के जीवन में भी यह रक्त की भांति दौड़ रहा है और ज्ञान तथा विज्ञान की बड़ी बड़ी संस्थाओं, कारखानों तथा विश्व की व्यापारिक मण्डियों, बड़ी—बड़ी राजनैतिक पार्टियों के ख्यात का सारा खेल मीडिया के सर है, और यह विश्वव्याप्ति राजनीति पर इस प्रकार लाठी लिए खड़ा है जिस प्रकार प्राचीन काल में राजा महा राजा अपनी चौपालों में बैठ कर अपनी रिआया पर अपने आदेश लादा करते थे और किसी को क्या मजाल की चूं कर दे, आधुनिक काल की मीडिया में इण्टरनेट और टेलीवीज़न को जो स्थान प्राप्त है वह स्थान रेडियो और समाचार पत्रों को प्राप्त नहीं।

परन्तु मानवीय इतिहास का अध्ययन करने वाले इस बात को भली भांति जानते हैं कि इस्लाम ने अपने आरम्भिक काल ही से पारदर्शी मीडिया को अपनाया था। उसी समय से इस्लाम में मीडिया के महत्व की ओर लोगों की निगाहों को फेरा और अपने विश्वव्यापी दीन और उसके संदेश के प्रसारण हेतु मीडिया का प्रयोग किया कभी उसने अपने संदेश के प्रसारण हेतु भाषण का मार्ग अपनाया तो कभी पत्र व्यवहार को अपनाया, तो कभी लोगों को अल्लाह की ओर बुलाने के लिए ज्ञान तथा सदुपाय को अपनाया तो कभी उसने अपनी मीठी बोली से दूसरों के दिलों पर विजय प्राप्त की। अतः यह कहना गलत नहीं होगा कि शुद्ध मीडिया ने इस्लाम की गोद में आँखें खोलीं, और पला बढ़ा, इसलिए कि इस्लाम विश्वव्यापी धर्म हो कर आया था, तथा उसका विश्वव्यापी

संदेश मानव जाति में प्रेम तथा करुणा पैदा करना था और मानव जाति को अम्न व शांति के साथ जीवन बिताने को ढंग सिखाना था और उनके बीच भाई चारे का भाव पैदा करना था नेकियों की तरफ बुलाना और बुराईयों से बचाना था अतएव इसी मौलिक तथा शक्तिशाली दृष्टिकोंण का सकारात्मक परिणाम था कि इस का विश्वव्यापी संदेश जबान और कलम की छाया में धरती के एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में अपनी अध्यात्मिक किरणें बिखेरता रहा, और मानवता की सूखी खेती को सींचता रहा और भ्रष्ट लोगों को सत्य मार्ग दिखाता रहा। यहां तक कि पहली हिजरी शताब्दी के अन्त तक संसार के अधिकांश भागों पर इस का झण्डा लहराने लगा और मानवजाति की बड़ी संख्या इस्लाम में प्रवेश करने लगी।

हर विचारक स्वीकार करता है कि ज़बान व क़लम दोनों विचार तथा दृष्टिकोंण के प्रसारण का साधन हैं, मगर दोनों के प्रयोग में थोड़ा अंतर है, प्रभाव दोनों का माना हुआ है, अतएव कलम द्वारा घटनाओं की आकृति सामने लाने, उस का विस्तार बताने तथा सूचनाओं के प्रसारण का काम लिया जाता है अल्बत्ता इण्टरनेट, टेलीवीजन तथा रेडियो भी मीडिया के साधन हैं, दूसरी ओर ज़बान द्वारा भी विचार दृष्टिकोण तथा प्रवृत्तियां स्थानांतरित किए जाते हैं, मगर उसके लिए भाषण तथा वकतव्य को साधन बनाया जाता है। और यह काम कांफ्रेंसों, गोष्ठियों में किसी समस्या को रख कर तथा उस पर वाद विवाद के पश्चात प्रस्ताओं को पारित कर के पूरा किया जाता है। और पवित्र कुर्आन में जो शब्द "बलाग" (पहुंचाना) प्रयोग किया गया है इस का भावार्थ ही "कलाम" (बात) को दूसरों तक सत्यनिष्ठा तथा सच्चाई के साथ पहुंचाना है और बलाग यानी पहुंचाने का अन्दाज़ व उस्लूब (शैली) जमाने की करवटों के साथ बदलता रहता है।

लेकिन शैली की विभिन्नता के बावजूद उन का उद्देश्य हमेशा एक रहा और वह उद्देश्य है कौम में एकता तथा अखण्डता की सुरक्षा, समाज में प्रेम तथा मेल जोल, भाई चारगी और उदारता को सुदृढ़ करना, नैतिकता का प्रसारण, कौम के आचरण को संवारना, विनाशकारिता, घृण शत्रुता, पक्षपात जड़ता, निथ्या भाषण और प्रोपेगण्डे से दूर रहना, यहीं से पवित्र कुर्आन में आए हुए शब्द "बलाग" (पहुंचाना) के महत्व का अनुमान होता है, और आधुनिक काल में उस के महत्व का पता चलता है परन्तु इन सच्चाईयों के होते हुए बड़े खेद के साथ कहना पड़ता है कि आधुनिक काल का वैज्ञानिक मीडिया इस्लाम और मुसलमानों के विषय में वही दोहराता है जो उसे उस के आदि गुरु (इबलीस) ने सिखा रखा है, आज का विश्व मीडिया जिस पर पश्चिम का आधिकर है, अपनी समस्त गतिविधियां और अपने समस्त साधनों का प्रयोग

इस्लाम की छवि धुंधला करने, उसकी सभ्यता, संस्कृति के प्रकाशवान मुखडे को धूमिल करने, उसके विश्वव्यापी संदेश की धज्जियां बिखेरने, और मिथ्या भाषणों और प्रोपैगण्डों द्वारा उस की आहनी दीवार (लौह भित्त) में दरार डालना है, वह इस्लाम जगत और मुसलमानों को हर स्थान पर रुसवा व बदनाम करके उन के उत्साह और साहस को नष्ट कर देना चाहता है और उसके लिए एडी चोटी का जोर लगा रहा है कि उन को ऐसी निराशा की खाई में ढकेल दिया जाए जहां से सफल तथा जीवित कौम के उज्जवल भविष्य की समस्त संभावनाओं के समस्त द्वार बन्द हो जाते हैं और भूत कालीन महानता की वापसी की राह में निराशा का ऐसा भारी पत्थर रख दिया जाए कि उस के विषय में विचार करने के सारे सोते सूख जाएं, इस्लाम और मुसलमानों के विरोध में यह बुरी जेहनीयत (मानसिकता) तथा अपवित्र षडयंत्र जिन के बोझ तले इस्लाम जगत कराह रहा है।

पश्चिमी शक्ति तथा इसराईली शासकों के नेतृत्व में पूरी की जा रही हैं जिन्होंने मत की स्वतंत्रता न्याय प्रियता, कौमों के अधिकारों का सम्मान और पारस्परिक सहयोग तथा सदभावना का ढिंडोरा पीट रखा है और संसार को यह यकीन दिलाने की चेष्ठा की जा रही है कि शांति तथा सुरक्षा का झण्डा उठाने वाला अगर संसार में कोई है तो वह पश्चिम और इसराईल हैं कैसा अंधेर है कि भेड़िया, बकरियों को विश्वास दिला रहा है कि मैं तुम्हारा संरक्षक हूं और संसार की मूर्खता भी प्रशंसनीय है कि शांति की धज्जियां बिखेरने वालों और मनुष्यों का रक्त पीने वाले हिंसकों और उन की तड़पती, सड़ती, गलती लाशों (शवों) को देख कर थिरकने वालों को शांति की गारण्टी देने वाला समझ रही है, ऐसा क्यों? कि पश्चिमी मीडिया ने संसार की कौमों को ऐसी अफ्यून की गोली खिला दी है कि पूरा संसार मीडियाई अफ्यून से अचेज है, क्या आज आप को विश्व मीडिया में कोई सच्चाई अथवा निष्ठा दिखाई दे रही है क्या उसके अन्दर साधारण लोगों के आभास अथवा भावनाओं के सम्मान की कोई किरण दिखाई देती है? और मुसलमानों से संबन्धित घटनाओं की शुद्ध चित्रकारी का शुद्ध उदाहरण जो घटना की वास्तविकता को दरशाए? आज का विश्व मीडिया इस्लामी जगत की वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों और मानव जाति के निर्माण तथा विकास में उन की समस्त दौड़ धूप तथा चेष्टा और निरंतर प्रयासों पर इस तरह परदा डालता है कि जैसे इस्लामी जगत पर सभ्यता तथा संस्कृति ज्ञान विज्ञान का शुभ काल आया ही नहीं, यद्यपि यूरोप को सभ्यता सिखाने वाले, और जड़ता से निकालने वाले मुसलामान ही थे इस के विपरीत किसी गैर इस्लामी मुल्क में कोई छोटी सी घटना घटती है तो यही मीडिया उसको पहाड़ बना

कर प्रस्तुत करता है और उसको विश्व व्यापी बनाने में एडी से चोटी तक प्रयास में लग जाता है, चाहे प्रस्तुत की हुई शक्ल और घटना की वास्तविक शक्ल में स्पष्ट विलोमता पाई जाती हो, अतः यदि आज हम मानवीय मान्यताओं की बात करें और विश्व मीडिया के मैदान में खोजें तो यह दीवाने की बड़ से कम नहीं, इसलिए कि विश्व मीडिया का उद्देश्य मुसलमानों के सुदृढ़ अस्तित्व को निर्बल करना, उस की सभ्यता तथा संस्कृति को मलया मेट और उस की जड़ों को खोखला करना है। अपितु यह कहना अधिक उचित होगा कि आज का पाश्चात्य मीडिया इस्लाम जगत और मुसलमानों के विरुद्ध सैन्य आक्रमण का एक भेद है उस का इस प्रकार का आक्रमण और उसकी नापाक जेहनियत (अपवित्र मानसिकता) का आरम्भ, इस्लाम के आरम्भ से आज तक जारी है जिसकी घोषणा पवित्र कुर्आन ने चौदह सौ साल पहले ही कर दी थी और मुसलमानों को इस प्रकार सूचित किया था। अनुवादः "यहूदी और ईसाई तुम से हरगिज राजी न होंगे जब तक उन के तरीके पर न चलने लगो, साफ कह दो कि रास्ता बस वही है जो अल्लाह ने बताया है"।

(अलबकराः120)

अतः हमारा ख्याल है कि आधुनिक मीडिया जिस का प्रयोग हो रहा है वह मानव जाति को विकृत करने मुस्लिम समुदाय के विरुध प्रोपेगण्डा करने, और उसको आतंकी सिद्ध करने, और उसके विरुद्ध में जन साधारण को एक मत करने और मानव जाति से उस को अलग थलग करने में ऐसी बुरी गतिविधियां अपनाए हुए है कि जिस की आशा जंगली पशुओं से भी नहीं की जा सकती, न कि उसे सभ्य मनुष्य अंजाम दें यह कितनी बुद्धि को चकित कर देने वाली और आश्चर्यजनक बात है कि जो काम पशुओं में भी बुरा हो वह सभ्य मानवों में विद्यमान हो बुद्धि चकित है कि इस प्रकार के समाज को क्या नाम दे।

मीडिया का यह दो रुखापन केवल चिंता जनक ही नहीं है अपितु समस्त मानवजाति को विनाश के निकट ले जाने की एक घृणात्मक चेष्टा है अतएव आज मीडिया पर जिन लोगों का अधिकार है उन का यह मानवीय कर्तव्य बनता है कि वह उसको रचनात्मक तथा मानवता के दुख दर्द को दूर करने के लिए प्रयोग करें, वह दिन दूर नहीं है जब मीडिया का विष स्वयं उन के शरीर में प्रवेशकर जाएगा और उनके अस्तित्व को मिटा कर दम लेगा इसलिए कि यह वास्तविकता दिन के उजाले की भांति खुली हुई है "चाह कन रा चाह दर पेश" (दूसरों के गिरने के लिए कुआं खोदने वाला खुद उस कुऐं में गिर सकता है)। अतः पश्चिमी मीडिया पर अधिकार रखने वालों को सचेत हो जाना चाहिए और सदुपाए तथा बुद्धिमानी के साथ मानवता की सुरक्षा का प्रयास करना चाहिए।

❖❖❖

इस्लाम के तीन बुन्यादी अ़क़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

लोगों के दो वर्गः–

नबीगणों के इन स्पष्ट निर्देश तथा शिक्षाओं के पश्चात साधारण रूप से लोगों के दो वर्ग अस्तित्व में आये।

1. एग वर्ग वह है जिसने अल्लाह के उन पैगम्बरों पर भरोसा किया जिनको अल्लाह ने नबूव्वत (दूतता) व रिसालत (दूतकर्म) से सम्मानित किया अपनी सत्य पहचान प्रदान किया। अपने व्यक्तित्व व गुणों तथा इच्छाओं से अवगत करने के लिए अपने तथा सृष्टि के बीच माध्यम बनाया और उनको विश्वास का ऐसा धन प्रदान किया जिससे अधिक की कल्पना सम्भव नहीं, वह प्रकाश प्रदान किया जिससे अधिक बुद्धि को रोशन करने वाला तथा विश्वसनीय कोई प्रकाश नहीं हो सकता।

अनुवादः *"और इसी प्रकार हम इब्राहीम को आकाशों और धरती की राज सत्ता दिखाते हैं ताकि उन्हें भलीभांति विश्वास हो जाए। (सूरःअल्अन्आमः 75)*

नबियों के इसी वर्ग के एक व्यक्ति हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को जब वह उनसे अल्लाह तआला के व्यक्तित्व व गुणों के विषय में बिना किसी ज्ञान व प्रकाश के अनावश्यक बहस कर रही थी उत्तर दिया।

अनुवादः *"क्या तुम मुझ से अल्लाह के विषय में झगड़ा करते हो जबकि उसने मुझे सत्यमार्ग दिखा दिया है।*

(सूरः अल् अन्आमः 81)

इस वर्ग के लागों ने नबियों का दामन थाम कर और उनके द्वारा प्रदत्त मूल वास्तविकताओं व अकीदों के प्रकाश में ब्रह्माण्ड व जीवों मे चिन्तन–मनन और अल्लाह की निशानियों तथा आकाशीय ईश ग्रन्थों में विचार की यात्रा आरम्भ की तथा इसकी सहायता से सदकर्म, मन–शुद्धि और आचरण सुधार का कार्य ठीक लकीरों पर किया, उन्होंने बुद्धि प्रयोग को त्यागा नहीं, केवल यह किया कि उसको सही मार्ग पर लगा कर उससे वह काम लिया जो वह कर सकती थी और जो उसका वास्तविक लाभ था, उन्होंने देखा कि उसके पश्चात नबियों की शिक्षाओं और उनके परिणाम की सत्यापन करते हैं तथा उनके ईमान व यक़ीन (आस्था व विश्वास) में बढ़ोत्तरी होती जाती है।

अनुवादः *"और इस चिन्तन मनन से उनके ईमान व आज्ञाकारिता में बढ़ोत्तरी ही हुई।*

(सूरः अल्अहज़ाबः 22)

2. दूसरा वह गिरोह है जिसने अपनी प्रतिभा व ज्ञान पर पूर्ण रूप से भरोसा किया, बुद्धि की लगाम को स्वतंत्र छोड़ दिया तथा खूब अनुमान लगाया, अल्लाह की जात व गुणों के अध्ययन व शोध में इस प्रकार निःसंकोच विश्लेषण किया जैसे प्रयोगशाला में प्रकृति, ऊर्जा अथवा किसी वनस्पति

के साथ किया जाता है, और अल्लाह के विषय में "वह ऐसा है" वह ऐसा नहीं है कि बेधड़क निर्णय प्रारम्भ कर दिये, उनके यहां इस सम्बन्ध में वह ऐसा नहीं है की मात्रा, वह ऐसा है के मुकाबले बहुत ज़ियादा थी, तथा यह वास्तविकता है कि मनुष्य विश्वास व प्रकाश से वंचित हो तो उसके लिए नकारना मानने से अधिक सरल होता है। इसी लिए यूनानी दर्शनशास्त्र में खुदा से सम्बन्धित अध्याय में शोध के परिणाम अधिकांश नकारात्मक हैं, और कोई धर्म कोई जीवन व्यवस्था भी नकारने पर स्थापित नहीं होती।

यहाँ कुर्आन का एक विचित्र रोचक बिन्दु है जिसकी ओर सर्वप्रथम महान इस्लामी विद्वान हाफिज पुत्र तैमिया रहमतुल्लाहि अलैहि के एक वाक्य से ध्यान गया, वह कहते हैं "यूनान के दार्शनिक जब अल्लाह के गुणों का उल्लेख करते तो वे गुणों के अधिक विस्तार व गहराई में जाते थे जो उनकी दृष्टि से अल्लाह के लिए उपयुक्त नहीं है। अर्थात "नकारात्मक गुण" (वह ऐसा नहीं है तथा इस बात से अछूता है) और जब सकारात्मक गुणों का उल्लेख होता (अल्लाह ऐसा है और उसका यह गुण है) तो इसमें संक्षेप से काम लेते। इस प्रकार दर्शन शास्त्र में नकारात्क व्याख्यान विस्तार पूर्वक है और सकारात्मक व्याख्यान संक्षेप में मिलता है, इसके विरुद्ध पवित्र कुर्आन में अल्लाह के गुणों में सकारात्मक पक्षों का विस्तृत वर्णन किया गया है और नकारात्मक व्याख्यान का संक्षिप्त में उल्लेख किया गया है। दूसरे आकाशीय धर्मों और नबियों की शिक्षाओं में समान गुण मिलेगा कि ऐसा है विस्तृत व ऐसा नहीं है संक्षिप्त।

अल्लाह तआला के गुणों की सकारात्मक व्याख्या पवित्र कुर्आन की निम्न आयतों में पढ़िये।

अनुवादः *"वही अल्लाह है जिसके अतिरिक्त कोई पूजा के योग्य नहीं, छिपी व खुली हर बात का जानने वाला, वह बड़ा दयालू तथा असीम कृपालू है। वही अल्लाह है जिसके अतिरिक्त कोई उपासना (इबादत) का पात्र नहीं, वास्तविक राजा, पवित्र, अम्न व सलामती देने वाला, निगहबानी करने वाला, वर्चस्व वाला, जबरदस्त, बड़ाई वाला, अल्लाह उन लोगों के साझी बनाने से पवित्र है। रचयिता (ख़ालिक़) भी वही, आविष्कार करने वाला व चेहरा मोहरा बनाने वाला भी वही, उसके अच्छे अच्छे नाम हैं आकाशों व धरती की सारी वस्तुएं उसकी गुणगान (तस्बीह) करती हैं और वही बड़ा जबरदस्त युक्तिवान है।*

(सूरः अल्हश्रः 22–24)

और नकारात्मक गुण का उल्लेख पढ़िए–

अनुवादः *"उसके समान कोई वस्तु नहीं और वह देखता–सुनता है।*

(सूरः आश्शूरा 11)

इमाम इब्ने तैमिया के कथनानुसार नकारात्मक गुण चाहे सैकड़ों की संख्या में हों उनका वह प्रभाव नहीं पड़ सकता जो एक सकारात्मक व्याख्यान का होता है। इमाम

इब्न तैमिया ने सर्वथा सत्य बात कही है, वास्तविकता यही है कि हमारा यह जीवन तथा गत वंशों के जीवन साक्षी हैं कि मानव जीवन हाँ पर स्थापित है न कि नहीं पर, न की मात्रा मानव जीवन तथा संस्कृति में बहुत कम है।

..... जारी.....

प्यारे नबी की प्यारी.....

फायदाः- इस हदीस से मालूम हुआ कि जैसे मर्द को ना महरम औरत को देखना हराम है उसी तरह औरत को मर्द का देखना भी हराम है।

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मर्द मर्द के गुप्तांग न देखे और औरत औरत का, और मर्द दूसरे मर्द के साथ नंगे बदन एक कपड़े ओढ़ कर न लेटें और औरत औरत के साथ। (मुस्लिम)

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

कुर्आन की शिक्षा.....

आयत में इससे आशय वे लोग हैं जिन्होंने सामर्थ्य के बावजूद मक्के से मदीना शरीफ़ हिजरत नहीं की थी जब कि उस समय मक्का विजय से पहले तक मक्का से मदीना हिजरत ज़रूरी क़रार दी गई थी और उसको ईमान का अनिवार्य भाग घोषित कर दिया गया था।

6. यानी विवश, कमज़ोर और असहाय।

7. यह मत सोचो कि रास्ते में मौत आ गई तो न इधर के रहे न उधर के मौत अल्लाह के हाथ में है यात्रा के बाद अगर तय थी तो हिजरत के सवाब से तो वंचित नहीं होगे।

8. क़स्र का आदेश है अर्थात् चार रकअत वाली नमाज़ दो रकअत पढ़ी जाएगी, आदेश उतरते समय क़ाफिरों के भय का भी उल्लेख किया गया था, अब आदेश आम है, यात्रा की हालत में नमाज़ क़स्र के साथ पढ़ी जाएगी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यही अमल था।

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

नज़्म

अल्लाह अल्लाह कर इंसान
अपने ख़ालिक को पहचान
एक बाप की सब औलाद
सारे इंसां आदम ज़ाद
आपस में सब भाई है
हव्वा सब की माई है
कोई दौलत वाला है
कोई गुरबत मारा है
दौलद वाला मदद करे
गरीब की अपने मदद करे
लिखा पढ़ा कोई आलिम है
कोई अनपढ़ जाहिल है
आलिम पर यह फर्ज़ हुआ
जाहिल को दे इल्म सिखा
इल्म पढ़ाये बेटी को
हुनर सिखाए बेटी को
हर औरत हो पढ़ी लिखी
रहे न जाहिल कोई भी
औरत किचन की माहिर हो
घर की अपने नाजिर हो
करे तरक्की देश हमारा
हिन्द हमारा भारत प्यारा

शासक तथा शासित

—मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी

शासक तथा शासित और राजा तथा प्रजा के जीवन में बड़ा अन्तर होता है। केवल उसी युग में नहीं जब कि निरंकुश शासक क़बीलों तथा जातियों पर राज्य कर रहे थे और ज़ालिम तथा अत्याचारी सम्राट, जिन्दगी अजीरन किये हुए थे बल्कि इस प्रजातंत्रीय युग में भी, जब कि आम जनता अपने शासकों को स्वयं निर्वाचित करती है और जनमत से हुकूमत की मशीन चलाई जाती है, शासक तथा शासित और नेता तथा आम जनता के जीवन में जमीन–आसमान का अन्तर पाया जाता है। विश्व का इतिहास इस प्रकार की ऊँच–नीच और असमानता की घटनाओं से भरा हुआ है, परन्तु इसी संसार के इतिहास में एक युग ऐसा भी आ चुका है जब कि वास्तव में समानता तथा बराबरी का बोलबाला था और शासक तथा शासित में किसी प्रकार का भेद–भाव न पाया जाता था। शासक आम जनता के दुख–दर्द में बराबर का शरीक था, वही खाता, जो साधारण व्यक्ति को उपलब्ध था वही पहेनता, जो आम जनता पहेन सकती थी। उसके रहन सहन का स्तर किसी प्रकार भी साधारण मनुष्य के जीवन स्तर से ऊँचा न था। शासक को जीवन–निर्वाह हेतु बस इतना मिलता था जितने में राज्य का गरीब से गरीब आदमी गुज़ारा कर सकता हो अतः आम जनता शासक से उत्तम जीवन व्यतीत करती थी।

यह स्वर्णयुग संसार में उस समय आया था जब कि इस्लामी कानून प्रचलित था और एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य पर तथा एक दल का दूसरे दल पर शासन नहीं था बल्कि अल्लाह की हुकूमत उसके बन्दों पर कायम थी। शासक किसी पार्टी के सम्मुख उत्तरदायी न थे बल्कि उस सर्वशक्तिमान अन्तर्यामी ईश्वर के सामने जवाब देह थे, जिससे दिल का चोर और नियतों का कोई खोट छिप नहीं सकता। ईश्वर की सर्वान्तरयामिता की कल्पना ने दिलों को ऐसा पवित्र कर दिया था कि उनके अन्दर मानव जाति के प्रति सद्भाव तथा संवेदना के अतिरिक्त कोई और भावना ही न थी। पूरे तौर पर अधिकार होने पर भी किसी पर अत्याचार हेतु हाथ न उठते थे। वहां ऊँचे से ऊँचे हाकिम के दिल में भी बल तथा अधिपत्य का नशा नहीं पैदा होता था बल्कि शासक के हृदय में कर्तव्यपालन का ध्यान सेवा भाव उत्पन्न करता था।

इस्लाम ने जीवन का समस्त ढाँचा ही बदल दिया था। जिस प्रकार उसने समाज के समस्त विभागों में परिवर्तन कर दिया था, उसी प्रकार शासन का उद्देश्य भी बिल्कुल बदल दिया था। इस्लाम से पूर्व शासन का अर्थ था भोग–विलास तथा ऐशपसन्दी और दूसरों पर हुकूमत करना, परन्तु इस्लाम ने शासकों को जनता का सेवक बताया और न केवल कथन से बल्कि क्रियात्मक रूप से ऐसे उत्तम तथा स्पष्ट आदर्श प्रस्तुत किये जिनके

शेष पृष्ठ...40 पर

जी0एस0टी0

—अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी

वस्तु के उत्पादन का, कर हो गया लागू।
मोदी के शासन काल का, कर हो गया लागू।।

जी0का अर्थ गुड्स है, एस0 का अर्थ सर्विस।
टी0 का अर्थ टैक्स है, कर हो गया लागू।।

भारत की कर वसूली, भारत में लगेगी।
भारत की भलाई में, कर हो गया लागू।।

सरकार की मंशा है, पब्लिक में धमाका है।
पब्लिक है परेशान, कर हो गया लागू।।

अखबार में सुर्खी है, व्यापारी की कुर्की है।
कर लेना जरूरी है, कर हो गया लागू

बचना नहीं किसी को, देना है कर सभी को।
सरकार की सख्ती का, कर हो गया लागू।।

व्यापारी कह रहे हैं, हम को है कर लगाना।
पब्लिक से वसूली का, कर हो गया लागू।।

सिद्दीक़ी देखता है, जी0एस0टी0 का असर।
महंगाई बढ़ गई है, कर हो गया लागू।।

दीन पे अपने रहेंगे हम, वतन की ख़िदमत करेंगे हम

—इदारा

हम हैं मुस्लिम हम हैं हिन्दी
अपने वतन के हम हैं जुन्दी

लड़ने में हम बड़े शुजाअ़
करते सरहद का हैं दिफाअ़

हम हैं अपनी आप मिसाल
पीठ दिखाएं नहीं मजाल

लोहा हैं हम दुश्मन पर
मोम वतन के अपनों पर

लेकिन रखते हैं ईमान
करते कुर्बां उस पर जान

अल्लाह बस माबूद है
वही फ़क़त मस्जूद है

उसके नबी मुहम्मद हैं
हम सब उनकी उम्मत हैं

रहमत उन पर और सलाम
मिला उन्हीं से है इस्लाम

रहमत उनकी आल पर
उन के सब असहाब पर

उनकी जो तालीम है
हम को सब तस्लीम है

अर्जो समा और रोशन तारे
शम्सो क़मर और कोह ये सारे

दरया जंगल और मैदान
हैवां सारे और इंसान

रब के सब मम्लूक हैं
रब की सब मख़्लूक हैं

ये तो नही माबूद हैं
ये तो नहीं मस्जूद है

माबूद फ़क़त अल्लाह है
मस्जूद फक़त अल्लाह है

कोई उसको गॉड है कहता
कोई उसको ईश्वर कहता

गॉड फक़त माबूद है
ईश फक़त मस्जूद है

दीन पे अपने रहेंगे हम
वतन की ख़िदमत करेंगे हम

भाई चारा करेंगे आम
देंगे उलफत का पैग़ाम

इल्मो हुनर फैलाएंगे
खुशहाली यां लाएंगे

भारत प्यारा वतन हमारा
वतन हमारा दिल से प्यारा

भारत प्यारा जिन्दाबाद
वतन हमारा जिन्दाबाद।।

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः अगर लड़का अमरीका में हो और लड़की हिन्दोस्तान में, दोनो में निकाह का रिश्ता तै हो चुका है, किसी अहम मजबूरी के सबब लड़का जल्द हिन्दोस्तान न आ सकता हो ऐसी मजबूरी में अगर टेलीफोन पर निकाह कराया जाए तो दुरुस्त होगा या नहीं?

उत्तरः इस्लाम में निकाह के लिए जरूरी है कि ईजाब व क़बूल की मजलिस एक हो, इस लिए मोबाइल या फोन पर निकाह दुरुस्त नहीं है, अलबत्ता लड़का या लड़की में से कोई एक अमरीका या हिन्दोस्तान में फोन से किसी को अपने निकाह का वकील बना दे और वकील ऐसे दो मुस्लिम मर्द गवाहों के सामने जो वकील बनाने वाले लड़के या लड़की को जानते हों और यह भी जानते हों कि उसने इस शख्स को अपने निकाह का वकील बनाया है, अपने मुवक्किल की तरफ से ईजाब करे और दूसरा फरीक़ उसे क़बूल करे तो निकाह मुनअ़किद हो जाऐगा। क्यों कि इस सूरत में एक ही मजलिस में ईजाब व क़बूल पाए जाने का फरीज़ा अंजाम दिया जाएगा जो निकाह के लिए शर्त है, इस तरह निकाह हो जाएगा। फुक़हा ने वकालत के जरीये इस तरह के निकाह को दुरुस्त करार दिया है।

(फतावा हिन्दियाः 1/269)

प्रश्नः इन्टरनेट, ईमेल, टेलीफोन कांफ्रेंस और टेलीग्राम पर निकाह करना दुरुस्त होगा या नहीं?

उत्तरः निकाह के शराइत में एक यह है कि ईजाब व कबूल एक ही मजलिस में हो जैसा कि पहले सवाल के जवाब में गुजर चुका है, इसलिए इन्टरनेट, वेब साइट, और ईमेल वगैरह पर निकाह करने से शरअ़न निकाह नहीं होगा, इसके दुरुस्त होने की सूरत यही है कि किसी को ईजाब या क़बूल का वकील बनाया जाए और वह अपने मुवक्किल का निकाह करे, अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी रह0 ने इनइकादे निकाह की इस सूरत को जाइज़ करार दिया है।

(रद्दुल मुहतारः 3/63)

प्रश्नः निकाह के वक्त लड़की से इजाज़त कौन ले? आम तौर पर देखा जाता है कि निकाह पढ़ाने वाले काज़ी खुद दो गवाहों के साथ लड़की के पास इजाजत के लिए जाते हैं जब कि वहां औरतों की भीड़ होती है और क़ाज़ी के लिए यह अमल काफी आजमाइश का होता है, क्या काज़ी ही के लिए इजाज़त लेना जरूरी है?

उत्तरः लड़की से इजाज़त लेने के लिए काज़ी का लड़की के पास जाना जरूरी नहीं बल्कि खुद लड़की के वालिद और उनके दो महरम रिश्तेदार के साथ जाएं तो यह बेहतर है, क़ाज़िए निकाह अगर गैर महरम हो तो उन का जाना मुनासिब नहीं है ऐसे मौक़े पर वहां मौजूद औरतों को हट जाना

चाहिए कि अपने दो मुस्लिम गवाहों के साथ लड़की से इजाज़त के लिए जाएं और हर हाल में बे परदगी से बचा जाए परदे के अहकाम शरीअ़त में बहुत सख्त हैं, उनका लिहाज जरूरी है।

प्रश्नः शादी से कब्ल होने वाली ज़ौजा को लड़का देख सकता है या नहीं? अगर देखने की इजाज़त है तो किस हद तक?

उत्तरः शरीअते इस्लामी में निकाह के कब्ल पैग़ाम देने वाले लड़के को इजाज़त है कि अगर चाहे तो होने वाली ज़ौजा को देख ले, अबू दाऊद की रिवायत है, कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सहाबी से फरमाया "जब तुम औरत को निकाह का पैग़ाम दो तो अगर यह मुम्किन हो कि उस के वह अवसाफ देख सको जो निकाह में मतलूब हैं तो जरूर ऐसा करो"।

(सुनने अबू दाऊदः 1/284)

अब रही यह बात कि जिस्म के किन हिस्सों को देखा जा सकता है तो इस बारे में जम्हूर फुक्हा की राय है कि सिर्फ चेहरे और हथेलियों का देखना जाइज़ है बकीया हिस्सों का नहीं।

(हिदायाः 2/459)

अल्लामा इब्ने हजर लिखते हैं "जम्हूर उलमा कहते हैं कि मंगेतर को देखने में कोई हरज नहीं मगर चेहरा और हथेलियों के अलावा कुछ और न देखे"।

(फत्हुल बारीः 9/157)

प्रश्नः लड़के और लड़की ने अपने वालिदैन को बताए बगैर "कोर्ट मैरेज" कर ली, वहां सिर्फ एक फार्म भरा गया और दोनों ने अपने अपने कालम पर दस्तखत कर दिए, यह निकाह हुआ या नहीं?

उत्तरः इस्लामी शरीअ़त में निकाह सही होने के लिए फरीकैन के अलावा दो मुसलमान गवाहों का होना निकाह के वक्त शर्त है, अगर वहां दो मुसलमान गवाह ईजाब व क़बूल के वक्त मौजूद थे तो निकाह हो गया वरना नहीं।

(रद्दुल मुहतारः 2/262)

प्रश्नः एक बाप ने अपनी बेटी का रिश्ता तै किया और निकाह की तारीख से दो तीन दिन पहले बाप ने अपनी उस कुंवारी बेटी को इत्तिला दी कि तुम्हारा निकाह इतने महर पर फुलां के साथ करूंगा, इजाज़त है? लड़की खामोश रही बाप ने मुकर्ररा तारीख पर मुसलमानों की एक जमाअ़त के सामने निकाह पढ़वा दिया, लड़की को इत्तिला देने के वक्त कोई गवाह न था यह निकाह दुरुस्त हुआ या नहीं?

उत्तरः बाप अपनी बेटी से इस के निकाह की इजाज़त ले तो उस वक़्त गवाहों की जरूरत नहीं इसी तरह निकाह के वक़्त से दो तीन रोज़ पहले निकाह की इजाज़त लेने में कोई हरज नहीं इस लिए यह निकाह दुरुस्त है।

प्रश्नः बाज मस्जिदों में ऐसे टाइल्स लगे होते हैं कि उनमें आईने की तरह नमाज़ियों की सूरत नजर आती हैं क्या ऐसे टाइल्स मस्जिदों की अन्दरूनी दीवारों में लगाना दुरुस्त है और क्या इससे नमाज़ में कोई खलल पड़ेगा?

उत्तरः मस्जिद की रकम से मस्जिद की सजावट करना दुरुस्त नहीं अलबत्ता अगर कोई अपनी जाती रकम से अन्दरून की दीवारों पर

सजावट करे तो दुरुस्त है लेकिन फुजूल खर्ची न हो और ऐसे टाइल्स लगाना जिस में आईने की तरह सूरतें नजर आएं, अच्छा नहीं, लेकिन नमाज़ में कोई खराबी न आएगी, नमाज़ हो जाएगी।

(रद्दुल मुहतार: 2/430–431)

प्रश्न: मस्जिद की मेहराब और उसके इर्द गिर्द शीशा और ऐसे टाइल्स और मारबल लगाना जिस में आईने की तरह सूरतें नज़र आती हों इन का लगाना क्या दुरुस्त है? और इन के सबब नमाज़ में कोई खराबी तो न आएगी?

उत्तर: मस्जिद की दीवारों पर नक्श व निगार और ऐसे मार्बल लगाना मस्जिद की रकम से दुरुस्त नहीं अलबत्ता जाती रकम से लगाना दुरुस्त है लेकिन ऐसे नक्श व निगार बनाना जिन से नमाज़ी का ध्यान बंटे मकरूह है फिर भी नमाज़ में कोई खराबी न आएगी।

(दुर्रे मुख्तार: 1/688)

प्रश्न: मस्जिद में इमाम के सामने किसी किस्म का तुग़रा या तहरीर लटकाना कैसा है?

उत्तर: मस्जिद में इमाम के सामने या नमाज़ियों के सामने ऐसा तुग़रा या तहरीर लटकाना जिस से नमाज़ी का ध्यान बंटे मकरूह है मगर नमाज़ हो जाएगी।

(रद्दुलमुहतार1/658)

प्रश्न: तख–तए–सियाह पर कुछ नसीहतें लिख कर या हदीसें लिख कर मस्जिद के दाखिली दरवाजे पर लटकाना कैसा है?

उत्तर: मुसलमानों की इस्लाह के लिए तख–तए–सियाह पर हदीसें या दूसरी दीन की बातें वगैरा लिख कर मस्जिद के दाखिली दरवाजे की दीवारों पर लटकाना दुरुस्त है।

(फत्हुल बारी:2/117)

प्रश्न: मस्जिद के अन्दर मस्जिद ही के काम के लिए दफ्तर का कमरा बनाना कैसा है?

उत्तर: अगर उस कमरे में बनाने के वक्त से नमाज़ पढ़ी जाती रही है और वह मस्जिद में दाखिल है तो उसे दफ़्तर के लिए खास करना या किसी और काम के लिए खास करना दुरुस्त नहीं है।

(रद्दुल मुहतार:4/358)

प्रश्न: पुरानी मस्जिद का सामान अपने मकान या मदरसे में लगाना कैसा है?

उत्तर: पुरानी मस्जिद का सामान मस्जिद के जिम्मेदारों से खरीद कर अपने मकान या मदरसे में लगाना जाइज है।

(फतावा हिन्दीया: 2/459)

प्रश्न: अगर जाए नमाज़ पर मुखतलिफ किस्म की नक्काशी हो तो उस पर नमाज़ पढ़ना कैसा है?

उत्तर: अगर सज्दे की जगह पर जानदार की तस्वीर होगी तो नमाज़ न होगी लेकिन अगर पैरों के नीचे किसी जानदार की तस्वीर होगी तो नमाज़ हो जाएगी। दूसरे नक्श व निगार से नमाज़ में कोई खराबी न आएगी। दुर्रे मुखतार में है कि अगर जानदार की तस्वीर नमाज़ी के कदमों के नीचे या बैठने की जगह पर होगी तो नमाज़ मकरूह न होगी।

(दुर्रे मुखतार:2/417)

प्रश्न: बाज मस्जिदों के बरामदे वाले हिस्से में कबरें होती हैं, जब नमाजी जियादा हो जाते हैं खास तौर से जुमे की नमाज़ में तो

शेष पृष्ठ...40 पर

–पिछले अंक से आगे

नमाज़ की हक़ीक़त व अहम्मीयत

–मौलाना मुहम्मद मंजूर नोमानी रह0

–हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

अहादीस में तर्के नमाज़ को कुफ्र करार दिए जाने का मन्शाः–

तो इन अहादीस का मन्शा यही है कि नमाज़ चुंकि दीन के दरख्त का तना और हयाते इस्लामी का सर चश्मा है, और इसी से अल्लाह तआला की इताअत और बन्दगी वाली वह ज़िन्दगी पैदा और नश्व व नमा पाती है जिस का नाम "इस्लाम" है, इसलिए नमाज़ न पढ़ने वाला इन्सान "इस्लामी ज़िन्दगी" से महरूम रहता है और उसकी ज़िन्दगी काफिराना जिन्दगी होती है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 की रिवायत करदा एक हदीस से (जिस को हाफिज़ सुयूती ने "दुर्रे मंसूर" में तबरानी के हवाले से नक्ल किया है) यह हक़ीक़त ज़ियादा वाज़ेह हो जाती है उस हदीस के अल्फाज़ यह हैं, अनुवाद : "नमाज़ के बगैर दीन नहीं, दीन में नमाज़ का दर्जा वही है जो जिस्मे इन्सानी में सर का दर्जा है।

यानी जिस तरह इन्सान की तमाम ताक़तों और सलाहीयतों का मरकज़ और मंबा सर है, और अगर उसको तन से जुदा कर दिया जाए तो बाक़ी जिस्म एक बे जान लाश रह जाता है जिस को जीता इन्सान नहीं कहा जा सकता। तो यही हैसियत निज़ामे दीनी में नमाज़ की है वही पूरी दीनी ज़िन्दगी के लिए सर चश्मा है, लिहाजा जब वह न होगी तो दीनी जिन्दगी भी मौजूद न रह सकेगी।

पूरे निज़ामे दीनी में नमाज़ की यह जो इम्तियाज़ी हैसियत है, सहा–बए– किराम रज़ि0 ने इस को खूब समझा था, इसी की बुन्याद पर हज़रत फारूक़े आज़म रज़ि0 ने अपने अहदे खिलाफत में इस्लामी कलमरौ के तमाम उम्माल (सूबों के आला अफसरान) को एक खास गश्ती फरमान लिखा था, अनुवादः *"तुम्हारे तमाम कामों में मेरे नज़दीक सबसे ज़ियादा मुहतम बिश्शान काम नमाज़ है। जिसने नमाज़ की कमा हक्कुहू हिफाज़त की उसने अपने पूरे दीन की हिफाजत कर ली और जिसने नमाज़ को जाये किया तो वह दीन के दूसरे कामों को और ज़ियादा बरबाद कर देगा।*

नमाज़ पूरी ज़िन्दगी के लिए मीज़ान और मेअ़यार हैः–

हज़रत फारूक़े आज़म के इस इरशाद से यह भी मालूम हुआ कि नमाज़ ही पूरी ज़िन्दगी जांचने के लिए मीज़ान और मेअ़यार भी है, जिस शख्स की नमाज़ जितनी आला होगी, उसकी बाक़ी दीनी जिन्दगी भी उसी कद्र बेहतर होगी, और जो शख्स नमाज़ में जितना कोताह और नाकिसुल हाल होगा, उसकी बकीया दीनी जिन्दगी में भी उसी के बकद्र नुक्सान होगा।

कियामत में भी नमाज़ ही को मीज़ान बनाया जाएगाः-

और रसूलुल्लाह सल्ल0 अलैहि व सल्लम की एक हदीस से बड़ी सराहत के साथ मालूम होता है कि कियामत में भी नमाज़ों ही को मीज़ान और मेअ़यार बना के "जिन्दगी" के इम्तिहान में आदिमियों की कामयाबी या नाकामी का फैसला किया जाएगा। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से मरवी है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, अनुवादः "कियामत के दिन आदमी के आमाल में सब से पहले नमाज़ की जांच होगी, अगर वह ठीक निकली तो बन्दा कामयाब और बामुराद होगा और अगर उस की नमाज़ें खराब निकलीं तो नामुराद और खसारे में रहेगा"। (तिरमिज़ी वगैरा)

और इससे ज़ियादा वाज़ेह और हमारे मक़सद के लिए ज़ियादा सरीह रिवायत अब्दुल्लाह बिन कुर्त की है, उसके अल्फाज़ यह हैं, अनुवादः "कियामत के दिन सब से पहले बन्दों की नमाज़ की जांच की जाएगी अगर वह ठीक और पूरी उतरी तो बाक़ी आमाल भी ठीक उतरेंगे, और अगर वह खराब निकल गई तो बाक़ी आमाल भी खराब और निकम्मे निकलेंगे"।

(तिबरानी)

गोया कियामत में आदमी की नमाज़ उसकी पूरी दीनी जिन्दगी का नमूना (बल्कि जियादा सही लफ़्ज़ों में उस की पूरी जिन्दगी का मिक्यास और मिरआत (आईना) होगी, और होना भी यही चाहिए, क्योंकि जब यह मालूम हो चुका है कि नमाज़ ही पूरी दीनी जिन्दगी को पैदा करती और उसकी रगों में खूने हयात दौड़ा के उसको नश्व व नुमा देती है तो हर शख्स की नमाज़ का उसकी पूरी दीनी जिन्दगी के लिए मेअ़यार और मीज़ान होना बिल्कुल करीने अक्ल व कयास है।

और इस मादी दुन्या में बल्कि खुद हमारे वजूद में इसकी नज़ीर यह मौजूद है कि हाज़िक तबीब सिर्फ नब्ज़ के जरीये कल्ब की कूवत का अन्दाज़ा करके (जो इन्सानी कूवतों का मरक़ज़ और मंबा है) इन्सान के पूरे निज़ामे जिस्मानी की कूवत और कमजोरी का दर्जा दरयाफ्त कर लेता है पस इसी तरह कियामत में हर शख्स की नमाज़ के कमाल व नुक्सान से उसकी पूरी दीनी जिन्दगी का कमाल व नुक्सान मालूम किया जाएगा।

जो लोग अपने को मुसलमान कहने के बावजूद सिरे से नमाज़ें नहीं पढ़ते हैं, इन अहादीस की रोशनी में वह गौर करें कि उन का अन्ज़ाम क्या होगा? हां इस गौर व फिक्र के वक्त वह एक और हदीस भी पेशे नज़र रखें जो मुसनद अहमद वगैरा में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आस रज़ि0 से मरवी है कि, अनुवादः "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक दिन नमाज़ पर कलाम करते हुए इरशाद फरमाया कि जो कोई नमाज़ को एहतिमाम से अदा करेगा तो नमाज़ उसके वास्ते कियामत में नूर होगी, बुरहान होगी, और बिल आखिर जरी-अए-नजात बनेगी, और जो कोई उसको एहतिमाम से अदा नहीं करेगा, तो उसके वास्ते न

नूर बनेगी, न बुरहान, न जरी–अए–नजात और वह शख्स कियामत में क़ारून फिरऔन, हामान और मुशरीकीने मक्का के सरगना उबइ बिन खलफ के साथ होगा''। मआज़ अल्लाह

(मुसनद अहमद वगैरा)

नमाज़ के बारे में यहां तक जो आयात व अहादीस मज़कूर हुई वह सब वईद व तहदीद के बाब की हैं, मुनासिब मालूम होता है कि एक आयत और एक हदीस और जमाअते सहाबा की एक मुत्तफ़का राय और नक्ल कर के एक हद तक इस मज़मून की तक्मील कर दी जाए।

रोज़े कियामत का एक अजीब मंज़रः-

सू–रए–कलम की आयत 43 में आखिरत के एक अजीब और इबरतनाक मंज़र का नक़्शा बड़े मुअस्सिर और बलीग़ अन्दाज में खींचा गया है इस आजिज़ के खयाल में नमाज़ की अहम्मीयत के मुतअल्लिक़ कुर्आने मजीद की वही सब से ज़ियादा मुअस्सिर आयत है।

आयत के मज़मून का हासिल यह है कि कियामत के दिन जब कि निहायत सख़्त घड़ी होगी और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की एक खास तजल्ली (तजल्लीयसाक़) ज़ाहिर होगी और लोगों से सर ब सुजूद हो जाने को कहा जाएगा, तो अल्लाह के जो बन्दे दुन्या में उस के हुजूर में सज्दा रेज़ हुआ करते थे (यानी नमाज़ें पढ़ा करते थे) वह फौरन सर ब सुजूद हो जाएंगे लेकिन जो लोग हर तरह की सिहत और तवानाई के बावजूद नमाज़ें नहीं पढ़ते थे, और नमाज़ के लिए दावत देने वालों और पुकारने वालों की बात नहीं सुनते और नहीं मानते थे वह हर चन्द चाहेंगे कि किसी तरह सज्दा कर सकें लेकिन उस वक्त उनकी कमरें तख्ते के मानिन्द कर दी जाएंगी और सजदा नहीं कर सकेंगे। उस वक़्त ज़िल्लत व ख्वारी का अज़ाब उन पर छाएगा, और उन की निगाहें ज़मीन में गड़ी होंगी।

अल्लाह तआला ने जिन्हें अक्ल व समझ का कोई हिस्सा दिया है वह बार बार गौर करें कि नमाज़ें न पढ़ने वालों को जहन्नम के अज़ाब से पहले सरे महशर रुस्वाई का यह कितना बड़ा अज़ाब होगा, और उस वक़्त उन के दिलों पर क्या गुजरेगी, "ऐ हमारे रब कियामत के दिन हम को रुस्वा न कीजिएगा"।

मुअज़्ज़िन की पुकार सुन कर नमाज़ को न उठना जुल्मऔर कुफ़्र व निफाक हैः-

नमाज़ की दावत व पुकार यानी अज़ान को जो लोग सुनते हैं और उस पर लब्बैक नहीं कहते (यानी नमाज़ नहीं पढ़ते) उनके मुतअल्लिक़ हज़रत मुआज़ से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, अनुवादः "जुल्म और सरासर जुल्म और कुफ़्र और निफाक़ है उस शख्स का फेअ़ल (काम) जो नमाज़ के लिए अल्लाह के मुनादी (मुअज्ज़िन) का बुलावा सुने और उस को क़बूल न करे (यानी नमाज़ को न जाए) (मुसनद अहमद वगैरा)

तर्के नमाज़ के मुतअल्लिक़ सहा–बए–किराम की आम रायः-

तर्के नमाज़ के मुतअल्लिक़ सहा–बए–किराम

की आम राय यही थी कि यह अमल इस्लाम के मनाफी और बिल्कुल काफिराना अमल है, अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ का बयान है।

अनुवादः *"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सुहबत याफ्ता अहले ईमान नमाज़ के सिवा किसी और दीनी अमल के तर्क को कुफ्र नहीं समझते थे।* (तिर्मिज़ी)

दीन में नमाज़ का जो खास दर्जा और इम्तियाज़ी मक़ाम है और अल्लाह के हुक्मों पर चलाने और बुराइयों से रोकने की, ब अल्फ़ाज़े दीगर पूरी इस्लामी ज़िन्दगी को पैदा करने और नश्व व नमा देने की उसमें जो खासीयत है (जिस की वज़ाहत सफहाते मा सबक़ (पिछले पन्नों) में की जा चुकी है) अगर आप ने उसको ठीक ठीक समझ कर ज़ेहन नशीन कर लिया है तो मज्कू–रए–सद्र (ऊपर लिखित) तमाम तरहीबी व तहदीदी अहादीस व आसार की हक़ीक़त का समझना आप के लिए आसान होगा, और अला हाज़ा नमाज़ और उस को अच्छी तरह अदा करने वालों के मुतअल्लिक़ जो हयात बख्श बशारतें कुर्आन या हदीस में वारिद हुई हैं उन का मंशा भी आप सही तौर से समझ सकेंगे, मसलन सू–रए–आला में फरमाया गया है, अनुवादः "काम्याब व बामुराद हुआ वह जो कुफ्र व शिर्क की गन्दगी से पाक हुआ, और उसने अपने रब का नाम याद करके नमाज़ पढ़ी।

फलाह व नज़ात के लिए ईमान के बाद सिर्फ नमाज़ की शर्त लगाने का मंशाः–

पस इस आयत में, और उस के अलावा भी बाज़ और आयात में सिर्फ ईमान और नमाज़ को जो फलाह व नजात का निसाब बतलाया गया है तो उस की वजह यही है कि नमाज़ के लिए पूरी "इस्लामी जिन्दगी" लाजिम है, गोया की यह मुसल्लमा है कि जब आदमी हक़ीक़ी किस्म की नमाज़ पढ़ेगा तो दीन के तमाम दूसरे मुतालिबात को जरूर ही अदा करेगा, यह हो ही नहीं सकता कि शऊर व हुजूर वाली नमाज़ भी हो और उसके साथ फ़िस्क़ व फुजूर भी जिन्दगी का मशगला हो, जैसा की पवित्र कुर्आन मे आया है, "बेशक नमाज़ बेहयाई और तमाम बुरे कामों से रोकती है"।

(अल अनकबूतः 45)

नमाज़ पढ़ने वाले से अगर लग़्ज़िशे बशरी के तौर पर गुनाह का इरतिकाब भी होगा तो नमाज़ में अल्लाह तआ़ला की अज़मत व किबरियाई का गफ्लत सोज़ तसव्वुर और उसके कहर व जलाल का बार बार खयाल और ध्यान और उससे पैदा होने वाला सोज व गुदाज और तौबा व इस्तिगफ़ार उसके दाग धब्बे तक को मिटा देंगे बल्कि अजब नहीं कि यह एहसास उस की तरक़्क़िये दरजात का मुस्तक़िल जरीआ़ बन जाएं, "बेशक अल्लाह तौबा करने वालों को महबूब रखता है"।

(अल बक़राः 222)

.....जारी.....

भविष्य मुसलमानों का है

—मौ0 सैय्यद मुहम्मद वाजेह रशीद हसनी नदवी —हिन्दी लिपिः रज़ीउल इस्लाम नदवी

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि जब भी कोई क़ौम पतन की ओर अग्रसर होती है, उसके चमकते हुए और रौशन निशानात मिटने लगते हैं। उसके लोगों में बेचैनी, चिन्ता और शिकायतें आम होने लगती हैं, नेताओं शासकों और अधिकारियों पर से लोगों का विश्वास उठने लगता है, राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संरचना बिखरने लगती है, और ऐसी समस्याएं पैदा होने लगती है, जिनके समाधान में देश असमर्थ हो जाता है, और मन में राष्ट्र की क्षमता और अस्तित्व से संबंधित संदेह जन्म लेने लगते हैं, उसके चमकदार और शानदार समय को लोग भुला देते हैं, और वह कौम हर ओर से आलोचना का विषय बन जाती है, और एक बूढ़े व्यक्ति के समान चारों ओर से पीड़ा से ग्रसित हो जाती है एक इंसान की तरह क़ौमें चाहे कितनी ही विकसित और समृद्ध हों शासन प्रभुत्व और वर्चस्व, उदय, चरमोत्कर्ष की अपनी अंतिम गंतव्य तक पहुंच कर पतन, पिछडेपन और अराजकता एवं भेदभाव का शिकार हो जाती हैं। और उनका अस्तित्व समाप्त हो जाता है और दूसरी क़ौमें उनकी जगह ले लेती हैं। कुर्आन इस तथ्य की ओर इशारा करते हुए कहता है "और हमने उनसे पहले कई समूहों को नष्ट कर दिया है, क्या तुम उनमें से किसी को देखते हो या (कहीं) उनकी भनक सुनते हो।

(सूरः मरियम— 98)

जिस तरह किसी राष्ट्र के विकास व तरक्की के कुछ कारण होते हैं, उसी प्रकार उसके पतन के कुछ कारण अवश्य होते हैं। आदि काल से यह दस्तूर चला आ रहा है कि अगर किसी कौम के विकास का सूर्य उदय होता है तो किसी का सूर्यास्त, मुसलमान दुन्या के बड़े—बड़े क्षेत्र में सदियों शासक रहे, उनमें किसी ने आधी सदी तक शासन किया तो किसी ने साठ साल तक अपना लोहा मनवाया है, जैसा कि एक फातिमी शासक ने साठ साल तक शासन किया, औरंगजेब आलमगीर के अधीनस्त अफगानिस्तान से ले कर असम तक क्षेत्र था, इस लंबे समय में उनके शासन में किसी तरह का झोल और किसी प्रकार की कमजोरी दिखाई नहीं पड़ती। मुसलमानों ने अपनी सत्ता शासनकाल में ज्ञान, कला एवं शिक्षा की अनगिनत सेवाएं कीं, और बहुत से कारनामे अंजाम दिये, जीवन के हर क्षेत्र में ऐसे ऐसे अतिमहत्वपूर्ण और अतिसफल (जीनियस) व्यक्तियों को अस्तित्व बख्शा,

जिन्होंने अपने अपने समय में एक नए युग का शुभारंभ किया, इस चमन का हर फूल अपने अंदर एक अनोखा वैभव एवं भव्यता रखता है, इसमें कोई हकीम है, तो कोई दार्शनिक, कोई गणित का इमाम है तो कोई खगोलशास्त्र का अनुसरणीय, इब्ने सीना, बैरूनी, इब्ने रुश्द, राज़ी, इब्ने हैसम, मसकोयह, और उनके अलावा सैकड़ों महान इस्लामी हस्तियां गुज़री हैं जिनके उदाहरण मानव इतिहास में नहीं मिलते, उनकी अपनी एक उपलब्धि और एक आविष्कार है, रहती दुन्या तक के इन्सान उनके द्वारा आविष्कार किये गए विज्ञान, कला और अध्ययन के कृतज्ञ रहेंगे, आज का सभ्य समाज उन्हीं मुस्लिम दार्शनिकों, शासकों एवं बुद्धिमानों के विज्ञान और प्रौद्योगिकी के नियम एवं विचारधाराओं के प्रकाश एवं प्रेरणा से विकास के पथ पर अग्रसर है।

इतिहास में ऐसे भी शासक परिवार देखने को मिलते हैं जिन्होंने कई कई शताब्दियों तक शासन किया, किसी ने तीन सदी तो किसीन ने पूरी पांच सदियों तक सरकार में कब्जा जमाए रखा, लेकिन फिर सुन्नते इलाही के अनुसार इस सरकार का भी तानाबाना बिखर गया, और दूसरे परिवार इस सरकार पर काबिज हो गए, सत्तारूढ़ परिवारों के उत्थान और पतन का सिलसिला इसी तरह चलता रहा, और शासन सत्ता की चाभी जिन परिवारों के पास रही उन्होंने जीत का दायरा एवं विस्तार व्यापक रूप से किया, दुश्मनों को परास्त किया, सभ्यता और संस्कृति, ज्ञान और कला के संस्थानों को स्थापित किया, अन्य सरकारों को घुटने टेकने पर मजबूर किया, यूरोपीय अधिकारियों और तुर्क उस्मानी शासकों (सुल्तान सुलैमान और सुल्तान सलीम) के बीच होने वाले पत्राचार पर जिनकी नजर है वह तुर्क साम्राज्य के विस्तार, उसकी शान शौकत, उसकी महानता, वर्चस्व और दबदबा व भय का अनुमान लगा सकते हैं, लेकन इतिहास ने करवट बदली और तुर्क उस्मानियों का शासनकाल समाप्त हो गया, दूसरी नई शक्तियां गालिब आ गयीं।

मुसलमानों ने दुन्या के विभिन्न महाद्वीपों में जिन में यूरोप और अफ्रीका भी हैं शासन किया, दुन्या के सभी क्षेत्र जहां इस्लाम के कदम पहुंचे वहां आज भी इस्लाम के प्रभाव बाकी हैं, चाहे इस्लामी सरकार हो या गैर मुस्लिमों का बोलबाला हो, उन सब में शीर्ष भूमि उंदलुस (स्पेन) है, जो धोखेबाज़ों की धोखेबाज़ी और विश्वासघातियों के विश्वासघात की भेंट हो गई, और फिर ईसाइयों ने उनके साथ क्रूरता और जानवरों जैसा व्यवहार किया, उन पर अत्याचार व जुल्म के पहाड़ तोड़े और जबरन उन्हें उंदलुस (स्पेन) छोड़ने पर मजबूर किया,

मानव अधिकारों के साथ इस प्रकार का खिलवाड़ किया और ऐसी धज्जियां उड़ाई कि जिस का उदाहरण इतिहास में नहीं मिलता, यहां तक कि यह कल्पना की जाने लगी थी कि इस्लाम समाप्त हो गया है। इसकी उम्र खत्म हो गई है, और उंदलुस की भूमि मुसलमानों से खाली हो गयी है।

लेकिन सलीबी अत्याचार एवं क्रूरता के बावजूद स्पेन में मौजूद इस्लामी निशानात, पड़ोसी अरब देशों के काम करने वाले मुसलमान और कुछ उदारवादी स्पैनिश शासकों की विशाल हृदयता और सहिष्णुता के कारण एक बार फिर इस्लाम की वापसी के आसार दिखने लगे हैं, ताजा रिपोर्टों के अनुसार स्पेन में इस्लाम के विकास को बढ़ावा मिल रहा है, प्रतिदिन नए मुसलमानों की संख्या में वृद्धि हो रही है, कुछ साल पहले स्पेन की राजधानी मैडरिड में शाह अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अजीज के संरक्षण में "धर्मों के बीच संवाद" शीर्षक के तहत एक वैश्विक सम्मेलन आयोजित किया गया, और इस सम्मेलन को सफल बनाने में स्पेनिश अधिकारियों और ईसाई नेताओं ने भरपूर साथ दिया, अगर मुसलमान अच्छे ज्ञान एवं बुद्धिमत्ता तथा अच्छे उपदेशों और नबी की दावत के रास्ते पर काम करते रहे तो दोनों पक्ष में आपसी मनमुटाव समाप्त हो जाएगा, आपसी संबंध बढ़ेंगे, दूरियां कम होंगी, निकटता एवं घनिष्टता बढ़ेगी, इतिहास यही बताता है, तथा न्याय की भी यही मांग है।

स्पेन के ही अंदाज़ में जहां इस्लाम तमाम जुल्म व अत्याचार के होते हुए भी अपनी तमाम विशेषताओं के साथ लौट रहा है, उस पर पड़ी हुई गर्द हट रही है, लोग इस्लाम को स्वीकार्य कर रहे हैं, मस्जिद व मदरसों की स्थापना हो रही है, इस्लामी शैली एवं इस्लामी विशेषताओं को नया जीवन मिल रहा है, मध्य ऐशिया और पूर्वी यूरोप में पाबंदियों एवं रूकावटों के बावजूद इस्लाम की लोकप्रियता में वृद्धि हो रही है।

वह महाशक्ति (सोवियत संघ) जिसने पूरे विश्व को अपने सामने माथा टेकने पर मजबूर कर दिया, पूरी दुन्या से चैन शांति का जनाज़ा निकाल कर अशांति, बेचैनी का माहौल स्थापित कर दिया, और इस्लामी दुन्या के विभिन्न क्षेत्रों के मुस्लिम निवासियों से स्वतंत्रता छीन ली और उनकी गर्दन में गुलामी का बंधन डाल दिया, मानव अधिकार का ऐसा उल्लंघन किया गया जिसका उदाहरण इतिहास में नहीं मिल सकता, पूर्व में मिस्र, इराक, सीरिया और अफ्रीका में अल्जीरिया, लीबिया, सूडान और सोमालिया में क़यामत बरपा कर दी गई, अत्याचार और जुल्म के ऐसे दिल दहला देने वाले दृश्य सामने आते हैं जिससे रूह कांप

जाए, तथा मानव मस्तिष्क चल जाए, लेकिन यह शक्ति भी टूट कर बिखर गयी, इन बर्बर अपराध को करने वाले यूरोपीय ईसाई थे जिनकी इस्लाम दुश्मनी केवल राष्ट्रीय, धार्मिक और जातीय आधार पर थी, उन्होंने मानवाधिकार की सारी हदों को पार कर दिया, अल्लाह के फज़्ल से मुसलमान इस खतरनाक परीक्षण से भी निकल आए, और नए सिरे से कोशिश शुरु कर दी हैं, समाचार रिपोर्टों से दुन्या के विभिन्न भागों में इस्लाम की लोकप्रियता का पता चल रहा है एक ओर जहां मदरसे खोले जा रहे हैं तो दूसरी ओर इस्लामी केन्द्र और इबादत गाहें निर्माण की जा रही हैं, ईसाई प्रचारकों और अहले चर्च का कहना है कि चर्च के मुक़ाबले में लोगों के दिलों में मस्जिदों की अधिक महत्वाकांक्षा है, यही कारण है कि इस तरह के उपाय किए जातें हैं कि जिससे इस्लाम का प्रचार एवं प्रसार बंद हो सके इसी उद्देश्य से कई दुश्मन संस्थाएं एवं संगठन दिन व रात इस्लाम की छवि बिगाड़ने के लिए प्रयासरत हैं।

सोवियत संघ से पहले दुन्या का सुपरपावर यूके था, जिसके पतन के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता था, यह प्रसिद्ध था कि ब्रिटेन के साम्राज्य में सूर्यास्त नहीं होता है, आज भी वह यह दावा कर रहा है कि वह सर्वोच्च साम्राज्य है, लेकिन वास्तविकता यह है कि आज वह जीवन और मृत्यु के बीच संघर्ष कर रहा है और वर्तमान वैश्विक शक्तियां भी गिरावट और पतन की ओर अग्रसर हैं।

संकीर्णता और तार्किक विचलन के कारण नसलों का विश्वास बिगड़ गया है, जब दमकते सितारे उन्हें दिखते हैं वे उन्हें खुदा समझ बैठते हैं, और भूल जाते हैं कि जुल्म स्थायी नहीं है, उन्हें सत्य नज़र नहीं आता, जिस समय यह शैतानी शक्ति समाप्त हो जाएगी तो उन पर तथ्य प्रकट हो जाएगा, झूठ मक्कारी धोखा सब कुछ दिनों के अतिथि होते हैं, समय के गुज़रते ही तथ्य सामने आ जाता है (और उन्होंने बड़े बड़े उपाय किये और उनके सब उपाय अल्लाह के यहां लिखे हुए हैं, गो वह उपाय ऐसे थे कि उन से पहाड़ भी टल जाएं)।

(सूरे इब्राहीमः 46)

वर्तमान सभ्यता की मुख्य विशेषताएं मक्कारी, अय्यारी, जालसाजी, और बेवफाई हैं, जीवन के हर क्षेत्र में (राजनीति हो या शिक्षा, अर्थशास्त्र हो या मीडिया) आधुनिक सभ्यता की इन्हीं चीजों का चलन है, लेकिन मक्कारी फिर मक्कारी है इसका पतन निश्चित रूप से है।

कहा जाता है और सच भी यही है कि भविष्य इस्लाम का है, इसलिए कि इस्लाम सच्चा धर्म है और

सच्चाई कभी पराजित नहीं होती, बल्कि उसे इतनी ऊँचाई नसीब होती है कि वह सुरैया तक पहुंच जाती है, लेकिन यहां एक दूसरा तथ्य भी है जो मानव इतिहास से संबंधित है वह तथ्य यह है कि भविष्य हमेशा पीड़ितों का मज़लूमों का होता है, और अन्याय व अत्याचार का समय बहुत थोड़ा होता है, सदियों से बेचारा मुसलमान मज़लूम है और मज़लूम का अधिकार है कि उसे विजय नसीब हो, उसके अधिकार वापस किये जाएं, उसकी शराफ़त बड़ापन ऊँचाई एक बार फिर वापस हो, परिस्थितियां और हालात से पता चलता है कि मुसलमानों में ये एहसास परवान चढ़ रहा है।

मौजूदा दौर में मुसलमान जिन हालात का शिकार हैं तथ्य यह है कि वह मुसलमानों को असली लक्ष्य से करीब ला रहे हैं, और यह स्थिति ज़ालिमों की पहचान करवा रही है, और अगर वास्तव में मुसलमानों में यह चेतना और जागरूकता पुख्ता हो जाये तो निश्चित रूप से उनके साथ खुदा की मदद होगी, और खुदा की रहमत में वो ज़िन्दगी गुजारेंगे।

अगर मुसलमानों को उनकी वास्तविक शक्ति और वास्तविक प्रतिनिधित्व नसीब हो जाये तो दुन्या में एक बार फिर मुसलमानों का परचम लहरा सकता है, उनकी महानता बहाल हो सकती है, उन पर छाई हुई पस्ती की घटाएं छट सकती हैं और उन पर लगाए गए निराधार आरोप समाप्त हो सकते हैं, अल्लाह तआला की तरफ से मदद का वादा है और यह मदद आकर ही रहेगी, अल्लाह तआला का फरमान है (जिन मुसलमानों से ख्वामख्वाह लड़ाई की जाती है उन्हें अनुमति है कि वे भी लड़ें क्योंकि उन पर अत्याचार हो रहा है और अल्लाह उनकी मदद करेगा वह निश्चित रूप से उनकी मदद करने में सक्षम है, यह वह लोग हैं कि अपने घरों से नाहक निकाल दिए गए (उन्होंने कुछ द्वोष नहीं किया) हां यह कहते हैं कि हमारा पालने वाला अल्लाह है और अगर खुदा लोगों को एक दूसरे से न हटाता रहता तो राहिबों के सोमीया और ईसाईयों की इबादतगाहें और मुसलमानों की मस्जिदें जिन में अल्लाह का बहुत सा ज़िक्र किया जाता है वीरान हो चुकी होतीं, और जो व्यक्ति अल्लाह की मदद करता है अल्लाह उसकी ज़रूर मदद करता है वास्तव में अल्लाह जोरदार और प्रभावी है, यह वह लोग हैं कि अगर हम उन्हें देश में शक्ति देदें तो ये नमाज़ पढ़ें और ज़कात अदा करें और नेक काम करने का आदेश दें और बुरे कामों से रोकें, और सब कामों का अंजाम अल्लाह ही के हाथों में है (और हम चाहते थे कि जो लोग कमजोर कर दिए गए हैं उन पर दया करें और उन्हें पेशवा बनाएं और उन्हें देश का वारिस बनायें और देश में उन्हें शक्ति दें और फ़िरऔन और हामान और उनके लश्कर को वह बात दिखा दें जिससे वे डरते थे)।

❖❖❖

आला तालीम के साथ-साथ उमूरे खानादारी की तर्बियत भी ज़रूरी

—हिन्दी लिपिः राशिदा नूरी

आज जब मैं एक कामयाब "पर्सनालिटी डेवलपमेंट ट्रेज़" मानी जाती हूं, कई बार आम लोग और मेरे स्टूडेंट मुझ से ये सवाल करते हैं कि मैंने ये सब्जेक्ट अपने कैरियर के लिए क्यों चुना? अस्ल में मैं देहली की ऐसी फैमली से तअ़ल्लुक़ रखती हूं जिसमें तअ़लीम को ज़िन्दगी का सबसे ज़रूरी हिस्सा समझा जाता है। मैंने आंख खोलते ही देखा तो वह थी तअ़लीम और इल्म की अहमीयत, खास कर अपने वालिदैन की बात करूं तो मेरे पापा मम्मी ने बचपन में मुझे एक सलीक़े मंद लड़की बनाने में बहुत मेहनत की है मैं ये मानती हूं कि मेरे पापा ने पढ़ाई को हमेशा तरजीह दी और मुझे बेहतरीन तअ़लीम दिलवाई लेकिन आज इस बात पर फख महसूस होता है कि जो बातें बचपन में चुभती थीं वही मेरे कामयाबी का रास्ता बनीं, शायद अभी तक क़ारिईन की समझ में मेरी बात नहीं आई होगी कि मैं क्या कहना चाहती हूं?

दरअस्ल मेरे कहने का मतलब ये है कि अगर एक कामयाब औरत या लड़की की बात करें तो कैरियर के साथ साथ वह कामयाब उसी वक़्त मानी जाती है जब वह सलीक़ेमंद हो यानि उसमें घर बार को सभांलने का टैलेन्ट भी हो वरना मेरी नज़र में सिर्फ पढ़ लिख कर अपने पैरों पर खड़ा हो जाना या माली तौर पर कामिल हो जाना कामयाबी नहीं है।

अल्लाह ने औरत को मल्टी टैलेण्टेड बनाया है इसलिए पहले उसको अपनी बुन्यादी ज़िम्मेदारियां समझनी होंगी, ये बात मैं ऐसे साबित कर सकती हूं कि जब हम एक अच्छे लड़के या मर्द की खूबियां बयान करते हैं तो हम कहते हैं कि वह पढ़ा लिखा है, हैण्डसम है, और बहुत अच्छा कमाता है, कैरेक्टर का अच्छा है, वगैरह—वगैरह क्या हम इस तरीक़े से एक औरत की खूबियां भी बयान कर सकते हैं? कि वह बहुत पढ़ी लिखी है, अच्छा कमाती है, कैरेक्टर की अच्छी है, शायद नहीं... इन खूबियों के साथ—साथ एक औरत का तआ़रुफ अधूरा है जब तक उसके साथ सलीक़े मंद का लफ़्ज़ न जोड़ा जाए, सलीक़े की वज़ाहत मैं इस तरह करूंगी कि कोई भी लड़की या औरत उस वक़्त तक अधूरी है जब तक उसको अपना घर संभालना न आ जाए, जब तक वह सफाई सुथराई की पाबंद न हो जब तक वह किचन संभालना न जानती हो, मुख़्तसर लफ़्ज़ों में हम ये कह सकते हैं कि जब उसको घर का माहौल संभालना न आए, जिस तरह हम एक मर्द में कमियां ढूंढते हैं जब वह बेरोज़गार या अनपढ़ होता है इसी तरह एक औरत कितने ही ऊँचे मक़ाम पर क्यों न पहुंच जाए

वह अगर सलीक़ेमंद नहीं है तो वह अपनी ज़ात के लिए अपने घरवालों के लिए बोझ होती है। इस बात को साबित करने के लिए मैं अपने दस साल के तजुरबे का ज़िक्र करना चाहूंगी मेरे पास इस अर्से में कई मुआमलात आ चुके हैं जो ये बात कर सकते हैं कि हां एक खूबसूरत और कामयाब औरत वही होती है जो अपने टैलेण्ट का इस्तेमाल अपनी ज़ाती ज़िन्दगी और प्रोफेशनल लाइफ दोनों में करे। जब मैं ऐसी लड़कियों से बात करती हूं कि तुम घर के कामों को बोझ या दक्यानूसी क्यों समझती हो तो उनका जवाब होता है कि हम क्यों करें लेकिन मेरा नज़रिया इस बारे में ये है कि शुरुआत औरत ही को करनी होती है तब मर्द भी तआवुन करते हैं। यहां पर अपनी बात को एक मिसाल से समझाना चाहूंगी, एक लड़की जिसके मां–बाप ने उसको बेहतरीन तअलीम दिलाई, और उसे हर वह चीज़ फराहम की जिससे उसकी पढ़ाई पर कोई असर न पड़े। उसकी मां ने उसको घर के कामों से यह कह कर दूर रखा कि एक दिन तो ये सब करना ही है, कालेज तक तअलीम हासलि करने के दौरान वह हर ज़रूरत के लिए अपनी मां पर इन्हिसार करती थी, उस लड़की को घर का कोई भी काम नहीं आता था, वह बारह साल की उम्र में भी एक कप चाय भी ठीक से नहीं बना सकती थी, उसकी अलमारी भी उसकी अम्मी दुरुस्त करती थीं, और तो और वह तमाम घरेलू कामों को अपनी बेइज़्ज़ती समझती थी, और मां बाप का रवय्या यह था कि उनकी बेटी एक दिन एक कामयाब लड़की बनेगी बस इसीलिए हम इस पर बोझ नहीं डालना चाहते, उसने इंजीनियरिंग मुकम्मल करके बहुत अच्छी मुलाज़मत हासिल कर ली, अपना और अपने मां बाप का नाम रौशन किया माली और इक़तिसादी तौर पर वह बहुत मज़बूत हो गई उसे किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ता था, फिर शादी का वक़्त आया उसी के बराबर लड़के से शादी हुई जो बैरोन मुल्क में मुलाज़मत करता था, वही मुस्तक़िल तौर पर रहने लगा है यहां तक सुनकर आपको लगा होगा कि वह लड़की खासी कामयाब है। लेकिन नहीं आपका ख़्याल ग़लत है क्योंकि शादी के तीन माह बाद ही लड़के ने लड़की को यह कह कर वापस उसके घर भेज दिया कि मैं तुम्हारी इंजीनियरिंग का क्या करूं, जब तुम मेरा घर नहीं संभाल सकती हो, मैं रोज़–रोज़ बाहर से जंग फूड कैसे खिलाऊं जब कि मुझे सेहत पर पड़ने वाले उसके बुरे असरात का इल्म हैं मैं तुम्हारे लिए नौकर कहां से लाऊँ? इस मुल्क में घरेलू नौकर रखने की मुमानिअत है, यह सब सुनने के बाद मां बाप को लगा कि उन्होंने बहुत बड़ी ग़लती की है कि उन्होंने अपनी बेटी की तरबीयत एक ही पहलू से की है, बस ये ग़लती शायद मेरे मां बाप ने नहीं की और आज मैं अपनी लाइफ में सुकून

और खुशहाली उसी वक़्त देखती हूं जब मैं अपनी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ में बैलेंस बनाती हूं अपने ऑफिस का काम जितने शौक़ से करती हूं उतने ही शौक़ से मैं बर्तन पोछा भी करती हूं, अगरचे मैं माली और इक़्तिसादी तौर पर किसी पर मुन्हसिर नहीं हूं, इसलिए मुझे गुलामी की भी ज़रूरत नहीं है, टाइम मैनेजमेंट, सफाई की अहमीयत, कबाड़ जमा न करना, ग़ैर ज़रूरी शॉपिंग से परहेज़, किचन और खाना पकाने का शौक़ रखना, खुद को और घर को आर्गेनाइज़ रखना वह भी बहुत मुसबत अंदाज़ से ये बातें मेरी खुद ऐतमादी और कामयाबी का राज़ हैं, आख़िर में इस मज़मून को पढ़ने वाली ख़वातीन से यही कहना चाहूंगी कि मेरी बात को समझने की कोशिश कीजिए और चूंकि खुद आप एक औरत हैं तो ये मान कर कि आपको अल्लाह ने बे पनाह खुसूसियात बख़्शी हैं, और बहुत हार्ड वर्किंग बनाया है, मेरा तो यही कहना है, कि जब भी बेटियों और बहनों से बात करें तो उनको यह बात समझाने की कोशिश करें कि औरत की असल ख़ूबसूरती उसका सलीक़ा है।

(रोज़नाम इन्क़लाब 27 जुलाई 2017 से ग्रहीत)

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर.....

ऐसी जगह नमाज़ पढ़ना पड़ती है कि सामने कबरें होती हैं तो ऐसी सूरत में नमाज़ होगी या नहीं?

उत्तर: जिस नमाज़ी के सामने किसी हाइल के बगैर कब्र होगी उस की नमाज़ मकरूह होगी लेकिन कब्र अगर दीवारों से घिरी है या नमाज़ियों और कब्र के बीच लकड़ी का पटरा वगैरा लगा दिया गया हो तो नमाज़ मकरूह न होगी।

(फतावा हिन्दीया: 5/319–320)

मजकूरा मजबूरी न हो तो ऐसी जगह नमाज़ न पढ़ें कि सामने कब्र पड़े।

प्रश्न: बाज मस्जिदों की दीवारों पर इश्तिहार कलेन्डर और हैण्डबिल वगैरा लगे होते हैं और दौराने नमाज़ उन की तहरीरों पर निगाह पड़ती रहती है सवाल यह है कि किबला वाली दीवार पर इस तरह की हैण्डबिल वगैरा लटकाना या चिपकाना कैसा है? उन तहरीरों पर नमाज़ी की निगाह पड़ने पर नमाज़ होगी या नहीं?

उत्तर: मस्जिद की दीवारों पर हैण्डबिल या कलेन्डर वगैरा लटकाना मुनासिब नहीं इससे नमाज़ी का ध्यान बंटता है और नमाज़ में खुशूअ़ व खुजूअ़ (दिल लगने) में फर्क पड़ता है, लेकिन उन तहरीरों पर निगाह पड़ जाने और मजमून समझ में आ जाने से फत्वा यही है कि नमाज़ फासिद (खराब) न होगी।

(अल–बहरुर्राइक:2/15)

❖❖❖

शासक तथा शासित.....

नाम विश्व के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखे जायेंगे। अगले पृष्ठों में ऐसी कुछ घटनाओं का वर्णन किया गया है जिनके अध्ययन से अनुमान लगाया जा सकता है कि वास्तव में इस्लामी शासन क्या है और उसके चलाने के लिए किस प्रकार के मनुष्यों की आवश्यकता है।

❖❖❖

अमरूद, सेब और नाशपाती

—हिन्दी: उबैदुल्लाह सिद्दीक़ी

-:अमरूद:-

स्वभावः-सर्द व तर

लाभः प्रफुल्लता लाता है, शक्ति प्रदान करता है, हृदय तथा आमाशय को शक्ति प्रदान करता है, पाचन क्रिया को बढ़ाता है और घबराहट को दूर करता है, भूख बढ़ाता है, दिमाग को तर रखता है, उसके पत्ते फिटकिरी के साथ उबाल कर दांतों के दर्द में कुल्ली करें तो फायदा होगा।

1. अमरूद की छाल का चूर्ण बना लें, दस्तों में दो ग्राम चूर्ण पानी से खिलाएं लाभ होगा।

2. काँच निकलने पर अमरूद के पत्तों को उबाल कर उस पानी से धुलाई करें फायदा होगा।

3. मुंह में अमरूद के पत्ते उबाल कर गुनगुने पानी से कुल्ली करें फायदा होगा।

खाने के बाद पक्का अमरूद खाने से कब्ज़ दूर होता है, ठण्डक में अगर ठण्ड का डर हो तो पक्का अमरूद हल्का नमक और काली मिर्च डाल कर गुनगुना करके खाए कब्ज दूर होगा।

-:सेब:-

स्वभावः-मीठा सेब गर्म व तर, खट्टा सेब सर्द व खुश्क।

लाभः मीठा सेब प्रफुल्लता लाता है, हृदय मस्तिष्क, जिगर, आमाशय तथा आमाशय के मुख को शक्ति प्रदान करता है, गर्मी को शान्ति देता है यानि गर्मी की हानि को कम करता है, घबराहट को दूर करता है हाँपने में लाभ देता है यानि हांपने को दूर करता है, भूख बढ़ाता है और इससे रक्त शीघ्र बनता है। इसका मुरब्बा बड़ा स्वादिष्ट और दिल व दिमाग़ को शक्ति देता है, और प्रफुल्लता लाता है।

-:नाशपाती:-

स्वभावः-सर्द व तर मीठा सर्द व गर्म के बीच, खट्टी सर्द व खुश्क।

नाशपाती देर में पचती है और उफारा पैदा करती है, खून गाढ़ा पैदा करती है, शरीर के अंगों को शक्ति प्रदान करती है मोटापा लाती है तथा प्रफुल्लता प्रदान करती है, जिगर की गर्मी में लाभ देती है।

(युनानी अदविया से ग्रहीत)

उर्दू सीखये

—इदारा

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़ये।

भारत प्यारा वतन हमारा, वतन हमारा दिल से प्यारा
بھارت پیارا وطن ہمارا، وطن ہمارا دل سے پیارا
हिन्द भी प्यारा नाम है इसका, हिन्दोस्तां भी नाम है इसका
ہند بھی پیارا نام ہے اس کا، ہندوستاں بھی نام ہے اس کا
हिन्द हमारा बड़ा अज़ीम, सेकूलर इसकी तन्ज़ीम
ہند ہمارا بڑا عظیم، سیکولر اس کی تنظیم
सवा अरब आबादी है, सब को यां आज़ादी है
سوا ارب آبادی ہے، سب کو یاں آزادی ہے
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, रहते हैं सब जैसे भाई
ہندو مسلم سکھ عیسائی، رہتے ہیں سب جیسے بھائی
मुस्लिम ईद मनाते हैं, हिन्दू होली गाते हैं
مسلم عید مناتے ہیں، ہندو ہولی گاتے ہیں
अज़ाँ है होती मस्जिद में, घण्टा बजता मन्दिर में
اذاں ہے ہوتی مسجد میں، گھنٹا بجتا مندر میں
दर्से बाइबिल चरचों में, गुरू ग्रंथ गुरूद्वारों में
درسِ بائبل چرچوں میں، گرو گرنتھ گرودواروں میں
दीन पे अपने जैनी हैं, दीन पे अपने बौद्धी हैं
دین پہ اپنے جینی ہیں، دین پہ اپنے بودھی ہیں
ला मज़हब भी है आज़ाद, करता कोई नहीं फसाद
لا مذہب بھی ہے آزاد، کرتا کوئی نہیں فساد
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद, हिन्द हमारा ज़िन्दाबाद
بھارت پیارا زندہ باد، ہند ہمارا زندہ باد